कक्षा 10 के छात्र/छात्राओं में सीखने की कठिनाइयों (Learning difficulties) को दूर करने हेतु

प्रेरणा

Revision Notes

हिन्दी

राज्य शिक्षा–शोध एवं प्रशिक्षण परिषद् बिहार, पटना द्वारा विकसित

हिन्दी (मातृभाषा)

पूछे जानेवाले प्रश्नों का अंकवार विवरण

अपठित गद्यांश			
(क)	साहित्य परक	–	12 अंक
(ख)	तथ्य परक	–	08 अंक
रचना से			
(क)	निबंध	–	10 अंक
(ख)	संवाद / पत्र	–	05 अंक
व्याकरण			
	व्याख्यात्मक, लघु स्तरीय एवं वस्तुनिष्ठ प्रश्न	–	15 अंक
पाठ्यपुस्तक			
(क)	गद्य	–	20 अंक
(ख)	पद्य	–	20 अंक
पूरक पाठ्यपुस्तक		–	10 अंक
		कुल –	**100 अंक**

सामान्य हिन्दी

अपठित गद्यांश

आपके प्रश्न पत्र में दो अपठित गद्यांश होंगे। प्रत्येक गद्यांश के नीचे कुछ प्रश्न दिए रहेंगे। प्रश्नों के उत्तर देने से पूर्व गद्यांश को पढ़कर अच्छी तरह समझ लेंगे। दिए गए प्रश्नों में कुछ प्रश्न तथ्य या सूचना आधारित होंगे तो कुछ समझ आधारित। तथ्य या सूचना आधारित प्रश्नों के जवाब सीधे गद्यांश में मिल जाएँगे। हाँ, समझ आधारित प्रश्नों के जवाब आपको गद्यांश के संदर्भ और भाव को समझते हुए देना है।

नीचे के उदाहरण से हम इसे और आसानी से समझ सकते हैं:

गद्यांश

मैं बिहारी हूँ। मुझे बिहारी होने का गर्व है। बुद्ध की कर्मभूमि और महावीर की जन्मभूमि में जन्म लेकर मैं अपने–आपको भाग्यशाली मानता हूँ। इस प्रांत के वैशाली जिला के अंतर्गत गोरौल थाना क्षेत्र में एक बड़ा गाँव है, जो शहर से दूर–सुदूर हरियाली और विभिन्न रंगीलियों तथा ऐतिहासिकता को समेटे हुए है, जिसे सोंधों नाम से जाना जाता है। जानकार बताते हैं कि प्राचीनकाल में कभी महेंद्र सिंधु कोई राजा यहाँ राज करते थे। शायद उन्हीं सिंधु शब्द से सोंधों शब्द की उत्पत्ति हुई होगी। खैर, जो भी हो उसने यहाँ की सभ्यता, संस्कृति और पौराणिकता के आधार को अभी भी बनाए रखा है। नारायणी और पुण्य सलिला गंगा के तट पर अवस्थित वैशाली (जिला) राजधानी पटना के उत्तर गंगा पार है।

नीचे दिए गए प्रश्नों के जवाब दें :

1. गद्यांश का उपयुक्त शीर्षक दें।
2. महेंद्र सिंधु कौन थे?
3. वैशाली पटना के किधर स्थित है?
4. लेखक को बिहारी होने पर गर्व क्यों है?

आपको प्रश्न सं0 (1) और (4) के उत्तर संदर्भ/भाव/समझ के आधार पर देने होंगे जबकि प्रश्न सं0 (2) और (3) के उत्तर सीधे–सीधे गद्यांश में दिख रहे हैं, यथा – प्रश्न सं0 (2) महेंद्र सिंधु सोंधों के राजा थे और 3 वैशाली पटना के उत्तर में स्थित है। जहाँ तक गद्यांशों के शीर्षक देने का सवाल है, जैसे ही आप गद्यांश को पढ़ेंगे कुछ मुद्दे पूरे गद्यांश में छाए रहेंगे। जैसे, ऊपर के गद्यांश में बिहार के गौरव का वर्णन है। अतः 'मैं बिहारी हूँ', 'मेरा बिहार', 'गौरवशाली बिहार' आदि शीर्षक दिए जा सकते हैं।

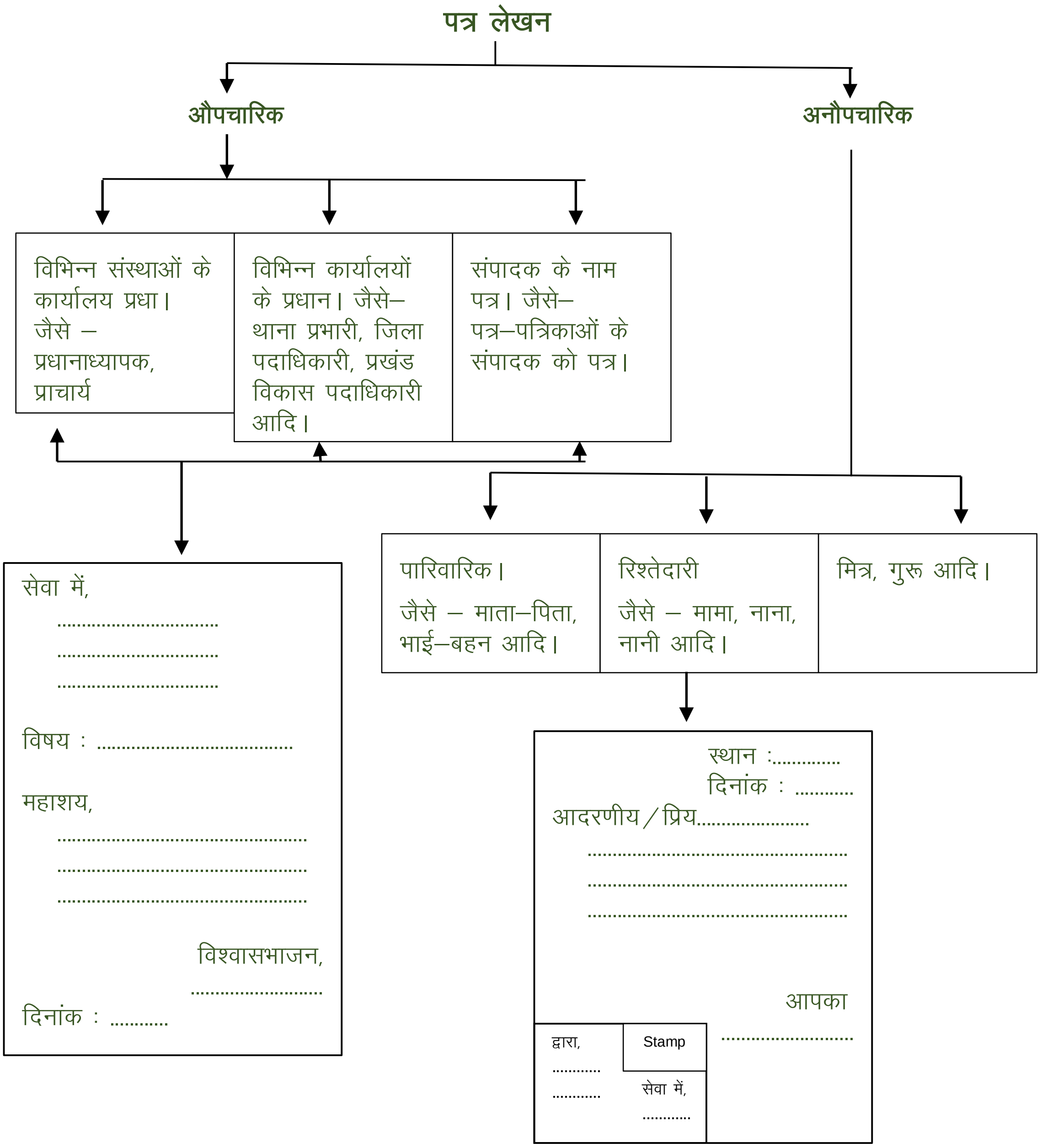

अनौपचारिक पत्र बड़ों के लिए :

आदरणीय और अभिवादन के साथ पत्र की शुरुआत की जाएगी। जैसे – आदरणीय माँ, प्रणाम/चरण स्पर्श आदि।

अनौपचारिक पत्र छोटे या मित्र के लिए

- प्रिय मित्र/नाम आदि संबोधन के साथ अभिवादन करते हुए पत्र की शुरुआत करें।
- पत्र के ऊपर दाहिनी तरफ स्थान का नाम और दिनांक अवश्य लिखें।
- नीचे बाँयीं तरफ पोस्टकार्ड का प्रारूप अवश्य बनाएँ।

पत्र–लेख एवं आवेदन–पत्र

क्र.	पत्र किसे	संबोधन एवं विषय	प्रेषक/पत्र देने वाला
01.	पिता के पास, बड़े भाई के पास या बड़ी बहन के पास।	आदरणीय पिताजी/बड़े भैया/दीदी (क) परीक्षा की तैयारी के संबंध में (ख) पुस्तक मंगाने के लिए (ग) परिभ्रमण के लिए अनुमति	आपका प्यारा/प्यारी
	मित्र के पास या छोटे भाई के पास	प्रिय रमेश... (क) परीक्षा में सफल होने पर (ख) परीक्षा की तैयारी के संबंध में	तुम्हारा दोस्त तुम्हारा/तुम्हारी भाई या बहन
02.	थानाध्यक्ष को आवेदन–पत्र	सेवा में, थानाध्यक्ष, कदमकुआँ, पटना विषय :– चोरी की घटनाओं पर रोक हेतु महाशय, ...	भवदीय दीपक कुमार/रानी कुमारी मछुआ टोली
03.	जिलाधिकारी को आवेदन–पत्र	सेवा में, जिलाधिकारी, पटना विषय :– आपराधिक घटनाओं पर रोक हेतु महाशय, ...	आपका विश्वासी रमेश कुमार/ नुसरत परवीन
04.	समाचार–पत्र के संपादक को ध्यान आकृष्ट करने के लिए	सेवा में, संपादक, दैनिक जागरण, पटना विषय :– (क) विद्युत संकट के संबंध में (ख) पेड़ों की अनावश्यक कटाई के संबंध में।	भवदीय आकाश कुमार विकास कुमार पटना
05.	प्रधानाचार्य के पास	सेवा में, प्रधानाध्यापक, पी0एन0ऐंगलो संस्कृत स्कूल, नया टोला, पटना द्वारा : वर्ग शिक्षक महाशय, आपसे सादर निवेदन है कि	आपका आज्ञाकारी छात्र/छात्रा अशोक कुमार/सलमा वर्ग–10 खण्ड– अ क्रमांक – 05

पत्र–लेखन

सड़कों की खराब स्थिति/बिजली आपूर्ति में बाधा/पानी की समस्याएँ/सफाई की समस्याएँ/अस्पताल से सम्बन्धित समस्याओं आदि को लेकर संपादक के नाम पत्र।

सेवा में,

संपादक जी,

दैनिक जागरण, पटना

मैं .... पिता का नाम ....निवास स्थान .... आपके समाचार पत्र के माध्यम से सूचित करना चाहता हूँ कि ....

(नोट : यहाँ किसी भी सामाजिक, राजनैतिक या व्यक्तिगत समस्या आने पर छात्र इसी तरह से लिखने का प्रयास करें।)

अतः आपसे सादर अनुरोध है कि मेरी उपर्युक्त विषयगत समस्या को दूर करने के लिए विशेष ध्यान देने की कृपा करें। इसके लिए मैं आपका सदा आभारी रहूँगा।

आपका विश्वासी,

छात्र का नाम :................

पिता का नाम :................

कक्षा : ....

क्रमांक : ....

संवाद

रोगी	:	डॉ0 साहब, नमस्कार!
डॉक्टर	:	नमस्कार,! बैठिए। आपको क्या परेशानी है?
रोगी	:	सर, कल सुबह से ही बुखार चढ़ गया है। बदन में हल्का दर्द और खाँसी भी है।
डॉक्टर	:	(जाँच करते हुए) हाँ, बुखार अभी है। मैं कुछ दवा लिख दे रहा हूँ। सुबह–शाम सेवन करें, ठीक हो जाएँगे। अभी सर्दी बढ़ी हुई है, इससे बचना होगा।
रोगी	:	धन्यवाद, सर।

ऊपर के उदाहरण (संवाद) में रोगी और डॉक्टर संदर्भ को समझकर अपनी बात कह रहे हैं। दोनों एक दूसरे को सुन–समझ रहे हैं। दोनों द्वारा की गई बातों में ऐसे शब्द हैं जो दोनों के बीच संबंध को जोड़ते हैं। जैसे परेशानी का संबंध बुखार और खाँसी से है। दवा का संबंध रोग से मुक्त होने का है। अतः इस उदाहरण से हम समझ रहे हैं कि संवाद में संदर्भ आवश्यक है। संदर्भ

को समझते हुए बातचीत आगे बढ़नी चाहिए। उदाहरण के लिए, रोगी–डाक्टर संवाद में कभी भी मनोरंजन या पार्टी की बात नहीं हो सकती। अतः संवाद में संदर्भ आवश्यक है।

कुछ संवाद के उदाहरण नीचे दिए जा रहे हैं –

संवाद/संदर्भ	प्रयुक्त होने वाले शब्द
(क) क्रेता और विक्रेता	भाव/दर, वजन, महंगा, सस्ता, रूपया आदि
(ख) छात्र/छात्रा और अध्यापक	अभिवादन, हाल–चाल आदि संबंधित विषयों पर बातचीत।

निबंध कैसे लिखें?

आपके प्रश्न पत्र में 10 अंक का एक निबंध लिखना होता है। निबंध प्रश्न पत्र में दिए गए निर्देश के आलोक में लिखने की अपेक्षा होती है। उदाहरण के तौर पर – प्रदूषण की समस्या।

इस निबंध में लेखन के क्रम का निर्देश कुछ इस प्रकार हो सकता है :

(i) भूमिका (ii) प्रदूषण के प्रकार (iii) प्रकृति और मानव पर कुप्रभाव (iv) प्रदूषण के कारण और रोकथाम के उपाय (v) उपसंहार

प्रत्येक निबंध में भूमिका और उपसंहार की चर्चा है। बीच के जो उपशीर्षक यथा प्रदूषण के प्रकार, मानव पर प्रभाव आदि निबंध के अनुसार बदलते रहेंगे। पहले हम भूमिका को समझ लेते हैं।

भूमिका

किसी भी शीर्षक पर निबंध लिखते समय जो उसकी शुरुआती समझ है, उसे भूमिका में अवश्य लिखें। दरअसल भूमिका औपचारिक रूप से निबंध के तथ्यों तक पहुँचने का जरिया है। उदाहरण के तौर पर प्रदूषण के बारे में आपकी समझ क्या है? वे कौन–से हिस्से हैं जिसे आप निबंध में शामिल करना चाहते हैं? आदि की चर्चा भूमिका में की जा सकती है।

इसी तरह उपसंहार भी सभी निबंधों के साथ जुड़ा हुआ है। इसे भी समझ लेते हैं –

उपसंहार

जैसे भूमिका से निबंध की शुरूआत होती है, वैसे ही उपसंहार से समाप्त। उपसंहार में पूरे निबंध के महत्वपूर्ण हिस्सों के साथ अपने विचार को भी जोड़ने का स्थान प्राप्त होता है। हाँ, विचारों को डालते समय नकारात्मक विचारों से बचने की आवश्यकता है।

अतः निबंध लिखने के पूर्व अपने मन से इस बात को निकाल दें कि आपका ज्ञान एवं आपके शब्द किताबी भाषा से कमजोर होंगे। निबंध में आपकी जो अपनी समझ और आपके जो विचार हैं उसे बेझिझक लिखें।

व्याकरण

व्याकरण के इस अंश के द्वारा आप 15 अंक के प्रश्नों का उत्तर दे सकते हैं :–

शब्द	एक या अधिक अक्षर से बनी हुई स्वतंत्र एवं सार्थक ध्वनि या ध्वनि समूह को शब्द कहते हैं। जैसे – कलम, थाली। शब्द के भेद – (1) अर्थ की दृष्टि से। (2) रूपान्तर की दृष्टि से। (3) रचना (बनावट) की दृष्टि से (क) रूढ़ –लोटा (ख) यौगिक–विद्यालय (ग) योगरूढ़– पंकज (4) उत्पत्ति की दृष्टि से (क) तत्सम–अग्नि (ख) तद्भव–आग (ग) देशज–लोटा (घ) विदेशज–डॉक्टर

वचन	संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण और क्रिया के जिस रूप से संख्या (एक या अनेक) का बोध हो, उसे वचन कहते हैं। जैसे–लड़का, लड़की, मैं, हम। वचन के भेद : एकवचन एवं बहुवचन। **एकवचन :** शब्द के जिस रूप से एक ही व्यक्ति या वस्तु का बोध हो, उसे एकवचन कहते हैं। जैसे–लड़की, घोड़ा, शाखा, मैं तू आदि **बहुवचन :** शब्द के जिस रूप से एक से अधिक व्यक्तियों या वस्तुओं का बोध हो, उसे बहुवचन कहते हैं। जैसे– लड़कियाँ, घोड़े, शाखाएँ, हम, तुम।

वाक्य

सार्थक शब्दों का क्रमबद्ध समूह जिससे कोई भाव स्पष्ट हो, वाक्य कहलाता है। जैसे–राम पुस्तक पढ़ता है।

रचना के आधार पर वाक्य के तीन भेद हैं :

1. **सरल वाक्य :** जिस वाक्य में एक कर्ता और एक क्रिया हो, उसे सरल वाक्य कहते हैं। जैसे– रहीम खेलता है।
2. **मिश्र वाक्य :** जिस वाक्य में एक सरल वाक्य के अलावा एक या एक से अधिक आश्रित उपवाक्य हों, उसे मिश्र वाक्य कहते हैं। जैसे – यह वही विद्यालय है जहाँ मैं पढ़ता था।
3. **संयुक्त वाक्य :** जिस वाक्य में दो या दो से अधिक सरल या मिश्र वाक्य किसी अव्यय द्वारा जुड़े हों उसे संयुक्त वाक्य कहते हैं। जैसे – (i) वह धनी है, लेकिन बहुत घमंडी है।

   (ii) (मिश्र से मिश्र) मैं रोटी खाकर लेटा कि पेट में दर्द होने लगा, और दर्द इतना बढ़ा कि तुरन्त डॉक्टर को बुलाना पड़ा।

संज्ञा :

किसी व्यक्ति, वस्तु, स्थान भाव आदि के नामों को संज्ञा कहते हैं। जैसे मनुष्य, गाय, विद्यालय, छात्र, शिक्षक।

अर्थ के आधार पर संज्ञा के मुख्यतः पाँच भेद हैं–

1. व्यक्तिवाचक–राम, रहीम, जॉर्ज
2. जातिवाचक– गाय, मनुष्य, वृक्ष
3. समूहवाचक–दल, मेला, सभा, सेना
4. द्रव्यवाचक– सोना, घी, चावल
5. भाववाचक– बचपन, मिठास, ईमानदारी, बुढ़ापा

सर्वनाम	संज्ञाओं के स्थान पर या उनके बदले जिन शब्दों का प्रयोग किया जाता है। उसे सर्वनाम कहते हैं। जैसे – मैं, वह, तुम। (1) पुरूषवाचक – मैं, तुम, वह (2) निश्चयवाचक – यह, वह (3) अनिश्चयवाचक – कोई,कुछ (4) प्रश्नवाचक – कौन,क्या (5) सम्बन्ध वाचक – जो,सो (6) निजवाचक – आप,स्वयं

विशेषण	जो शब्द संज्ञा अथवा सर्वनाम की विशेषता बतलाये, उसे विशेषण कहते हैं। जैसे – अच्छा, लाल। विशेषण के भेद : (1) संख्यावाचक – एक,दो (2) परिमाणवाचक – थोड़ा, बहुत (3) गुणवाचक – गोरा, काला (4) सर्वनामिक विशेषण – ऐसा आदमी कहाँ मिलेगा, यह ले लो।

क्रिया

जिस शब्द से किसी काम के करने या होने का बोध हो, उसे क्रिया कहते हैं। जैसे – खाना, पीना, उठना, बैठना इत्यादि।

क्रिया के विविध रूप –

1. नाम बोधक क्रिया – उदास होना।
2. पूर्वकालिक क्रिया – वह खाकर सो गई।
3. अकर्मक क्रिया – रीता चिल्लाती है।
4. सकर्मक क्रिया – वह स्वेटर बुनती है।
5. एककर्मक क्रिया – रंजना पुस्तक पढ़ती है।
6. द्विकर्मक क्रिया – दीदी मुझे संस्कृत पढ़ाती है।

7. सहायक क्रिया – आनन्द गाता है।
8. संयुक्त क्रिया – प्रेम बढ़ता गया।
9. प्रेरणार्थक क्रिया – पिता पुत्र से पत्र लिखवाते हैं।
10. पुनरूक्त क्रिया – मिल–जुलकर रहें।
11. क्रियार्थक संज्ञा – टहलना एक व्यायाम है।
12. नामधातु – उसने मेरी संपत्ति हथिया ली।

अव्यय	अव्यय उन शब्दों को कहते हैं, जिनमें लिंग, वचन, पुरूष, आदि के कारण कभी कोई परिवर्तन नहीं होता। जैसे – बहुत, भारी, यहाँ, वहाँ, आगे, पीछे, तथा, लेकिन, परन्तु, वाह, धन्यवाद। **अव्यय के भेद :** क. क्रियाविशेषण : धीरे–धीरे। ख. संबंधबोधक : आगे, बिना, अपेक्षा। ग. समुच्चयबोधक : और, व, एवं, तथा, किन्तु, परन्तु, अतः, कि। घ. विस्मयादिबोधक : आह, वाह, काश, शाबाश!

कारक के भेद	संज्ञा अथवा सर्वनाम का वह रूप जो वाक्य के अन्य शब्दों विशेषतः क्रिया से अपना सम्बन्ध प्रकट करता है, कारक कहा जाता है। जैसे – कर्त्ता, कर्म। कारक के भेद और विभक्तियाँ :

क्र.	भेद	विभक्तियाँ
1.	कर्त्ता	ने
2.	कर्म	को
3.	करण	से (द्वारा)
4.	सम्प्रदान	को, के लिए
5.	आपादान	से (वियोग)
6.	सम्बन्ध	का, के, की
7.	अधिकरण	में, पर
8.	सम्बोधन	हे, अरे, रे

सन्धि

दो वर्णों के मेल से जो विकार उत्पन्न होता है, उसे सन्धि कहते हैं। जैसे– रमा + ईश = रमेश, दिक् + अम्बर = दिगम्बर, मनः + ज = मनोज

संधि के भेद–

1. स्वर सन्धि : दो स्वरों के मेल से उत्पन्न विकार अथवा रूप परिवर्तन को स्वर सन्धि कहते हैं। स्वर सन्धि के भेद–
   क. दीर्घ सन्धि : विद्या + आलय = विद्यालय
   ख. गुण सन्धि : देव + इन्द्र = देवेन्द्र
   ग. वृद्धि सन्धि : सदा + एव = सदैव

घ. यण् सन्धि : यदि + अपि = यद्यपि
ड. अयादि सन्धि : ने + अन = नयन

2. **व्यंजन सन्धि :** जिन दो वर्णों में सन्धि होती है, उसमें यदि पहला वर्ण व्यंजन हो और दूसरा वर्ण स्वर या व्यंजन हो, तो व्यंजन सन्धि होती है। जैसे–
क. व्यंजन–स्वर : जगत् + ईश = जगदीश
ख. व्यंजन–व्यंजन : जगत् + नाथ = जगन्नाथ

3. **विसर्ग सन्धि :** विसर्ग के साथ स्वर या व्यंजन की सन्धि को विसर्गसन्धि कहते हैं।
विसर्ग–स्वर : दुः + आचार = दुराचार
विसर्ग व्यंजन : यशः + दा = यशोदा

समास	दो या दो से अधिक पदों का अपने विभक्ति चिह्नों को छोड़ कर एक पद हो जाना समास कहलाता है। जैसे – नीलकंठ, महापुरूष। समास के भेद– (1) अव्ययीभाव – यथाशक्ति (2) तत्पुरूष – राजपुरूष (3) कर्मधारय – नीलकमल (4) द्विगु – त्रिफला (5) नञ् – अनाथ (6) द्वन्द्व – सीताराम (7) बहुव्रीहि – पीताम्बर

उपसर्ग एवं प्रत्यय :

उपसर्ग	प्रत्यय
उपसर्ग वह शब्दांश है जो किसी शब्द के पहले आकर उसके अर्थ में परिवर्तन या विशेषता लाता है। जैसे :– प्र – प्रहार परा – पराभव अन – अनपढ़ बे – बेईमान	जो शब्दांश शब्दों के बाद लगाये जाते हैं, उन्हें प्रत्यय कहते हैं। जैसे :– भला + आई : भलाई पढ़ + आई : पढ़ाई मनुष्य + ता : मनुष्यता बाजी + गर : बाजीगर

वाच्य	कर्त्ता, कर्म या भाव के अनुसार क्रिया के रूप–परिवर्तन को वाच्य कहते हैं। जैसे–राम रोटी खाता है, राम ने रोटी खायी, सीता से चला नहीं जाता इत्यादि। **वाच्य के भेद** **(क) कर्तृवाच्य :** जिस वाक्य में कर्त्ता की प्रधानता हो अर्थात जिसमें कर्त्ता के लिंग, वचन तथा पुरुष के अनुसार क्रिया के लिंग, वचन एवं पुरुष हो, उसे कर्तृवाच्य कहते हैं। जैसे – 1. राम आम खाता है।

2. सीता आम खाती है।
3. राम और रहीम आम खाते हैं।
4. मैं आम खाता हूँ।

नोट–इन चारों वाक्यों पर विमर्श करने के बाद पता चलता है कि कर्त्ता के अनुसार क्रिया बदल रही है। जैसे – पहले में राम के अनुसार क्रिया है तो दूसरे वाक्य में क्रिया सीता के अनुसार खाती है हो गई।

(ख) कर्मवाच्य : कर्म के अनुसार यदि क्रिया में परिवर्तन (पुरुष, वचन, लिंग में) हो, तो उसे कर्मवाच्य कहते हैं। जैसे–

1. राम ने रोटी खायी।
2. सीता ने भात खाया।
3. हमलोगों ने संतरे खाये।

नोट– इन तीनों वाक्यों का विश्लेषण करने पर पता चलता है कि पहले वाक्य में क्रिया (खायी) कर्म (रोटी) के अनुसार है। यहाँ कर्त्ता (राम) पर क्रिया निर्भर नहीं है। इसी प्रकार अन्य वाक्यों में भी देखा जा सकता है।

(ग) भाववाच्य : भाववाच्य में भाव की प्रधानता होती है। अर्थात्–इसमें क्रिया के लिंग, पुरूष एवं वचन कर्ता या कर्म के अनुसार नहीं होते हैं। भाववाच्य सर्वदा अकर्मक क्रिया से ही होता है। जैसे –

कर्त्ता	**भाव**	**क्रिया**
राम से/राम द्वारा	चला	नहीं जाता।
सीता से/सीता द्वारा	चला	नहीं जाता।
लड़कों से लड़कियों द्वारा	चला	नहीं जाता।

उपर्युक्त उदाहरणों में हम देख सकते हैं कि इसमें भाव की प्रधानता है। इन (वाक्यों) में आयी क्रियाएँ– जाता, जाता, जाता, भाव (क्रिया) के अनुसार आयी है। अतः यह भाववाच्य हुआ। इसमें कर्म नहीं होता है और कर्ता से भी कुछ लेना–देना नहीं है। सिर्फ भाव की प्रधानता रहती है।

संक्षेप में याद रखें–

- ✓ कर्ता के अनुसार क्रिया–कर्तृवाच्य
- ✓ कर्म के अनुसार क्रिया–कर्मवाच्य
- ✓ भाव के अनुसार क्रिया–भाववाच्य

उच्चारण स्थान

वर्ण	उच्चारण स्थान
1. अ, आ, कवर्ग, ह, और विसर्ग	कंठ
2. इ,ई,चवर्ग,य और श	तालु
3. ऋ, टवर्ग, र और ष	मूर्द्धा
4. तवर्ग, ल, और स	दंत
5. उ, उ, और पवर्ग	ओष्ठ
6. ङ, ञ, ण, न और म अनुस्वार एवं चन्द्रबिन्दु	नासिका

7. ए, ऐ	कंठ + तालू
8. ओ, औ	कंठ + ओष्ठ
9. व	दंत + ओष्ठ

बलाघात	शब्द बोलते समय अर्थ उच्चारण की स्पष्टता के लिए जब हम किसी अक्षर पर अधिक बल देते हैं, तब इस क्रिया को स्वराघात या बलाघात कहते हैं। जैसे–इन्द्र, विष्णु। इनमें संयुक्त अक्षर से पहले इ और वि पर जोर दिया गया है।

पदबन्ध एवं उपवाक्य :

पदबन्ध

वाक्य के उस भाग को, जिसमें एक से अधिक पद परस्पर सम्बद्ध होकर अर्थ तो देते हैं, किन्तु पूरा अर्थ नहीं देते उसे पदबन्ध या वाक्यांश कहते हैं। जैसे– भारत के प्रधानमन्त्री।

पदबन्ध की विशेषताएँ :

- इसमें एक से अधिक पद का होना आवश्यक है।
- पदबन्ध वाक्यांश होता है।
- इसमें सभी पद एक इकाई के रूप में रहते हैं।

पदबन्ध के भेद :

(क) संज्ञा पदबन्ध – मिट्टी का तेल।
(ख) सर्वनाम पदबन्ध – सदा सत्य बोलने वाले।
(ग) विशेषण पदबन्ध – चाँद से भी प्यारा।
(घ) क्रिया पदबन्ध – जाता रहता था। कहा जा सकता है।
(ङ) क्रियाविशेषण पदबन्ध– आधी रात तक, वर्ष के अन्त तक, जमीन पर लोटते हुए।

उपवाक्य

ऐसा पदसमूह, जिसका अपना अर्थ हो, जो एक वाक्य का भाग हो और जिसमें उद्देश्य और विधेय हो उपवाक्य कहलाता है। जैसे – मोहन ने कहा कि मैं खेलूँगा। यहाँ 'मोहन ने कहा' प्रधान वाक्य है जबकि 'कि मैं खेलूँगा' उपवाक्य है।
उपवाक्यों के आरम्भ में अधिकतर कि, जिससे, ताकि, जो, जितना, ज्यों–त्यों, चूँकि, क्योंकि, यद्यपि, जब, जहाँ इत्यादि होते हैं।

उपवाक्य के तीन प्रकार होते हैं :

(क) संज्ञा उपवाक्य – राम ने कहा कि मैं खेलूँगा।
(ख) विशेषण उपवाक्य – वह आदमी जो कल आया था, आज भी आया है।
(ग) क्रियाविशेषण उपवाक्य – जब पानी बरसता है, तब मेढक बोलते हैं।

पदबन्ध एवं उपवाक्य में अन्तर

पदबन्ध	उपवाक्य
• पदबन्ध में क्रिया नहीं होती है। • पदबन्ध पूर्ण अर्थ नहीं देता है।	• उपवाक्य में क्रिया होती है। • उपवाक्य में पूर्ण अर्थ होता है।

मुहावरे

मुहावरे ऐसे वाक्यांश होते हैं जिनमें आए हुए शब्दों का हूबहू या सामान्य अर्थ नहीं लिया जाता है अपितु विशेष अर्थ लिया जाता है। हम कुछ मुहावरों के उदाहरणों के द्वारा इसे जान सकते हैं–

- नौ दो ग्यारह होना – भाग जाना
- हाथ की मैल – तुच्छ वस्तु
- श्री गणेश करना – प्रारम्भ करना
- आँखों का तारा – बहुत प्यारा
- तलवा चाटना – खुशामद करना
- आँख खुलना – बोध होना
- आँख दिखाना – क्रोध करना
- आँखें नीली पीली करना – नाराज होना
- उँगली उठाना – बदनाम करना
- कमर कसना – दृढ़ निश्चय करना
- कलेजा फटना – ईर्ष्या होना
- कान काटना – मात करना
- टन बोलना – मर जाना
- आस्तीन का साँप – कपटी मित्र
- लोहा लेना – मुकाबला करना
- खेत आना – युद्ध में मारा जाना
- उलटी गंगा बहाना – परम्परा के विरूद्ध काम करना
- लकीर का फकीर होना – पुरानी परम्परा का अनुयायी होना
- अंक लगाना – गले लगाना
- घी के दिये जलाना – खुशियाँ मनाना
- पौ बारह होना – लाभ ही लाभ

पर्यायवाची शब्द :

पर्याय का अर्थ होता है बदले में आने वाला लगभग सारे शब्द ऐसे हैं जिनके पर्याय अर्थात् बदले में बहुत शब्द आते हैं। इन पर्यायवाची शब्दों में अर्थ का थोड़ा अन्तर भी होता है, किन्तु ये होते हैं एक ही चीज के पर्याय।

पर्यायवाची शब्द के उदाहरण–

- ✓ कपड़ा – वस्त्र, अम्बर, परिधान, आवरण
- ✓ आकाश – गगन, नभ, व्योम, अम्बर, आसमान
- ✓ जल – पानी, नीर, वारि, उदक, सलिल
- ✓ आँख – नेत्र, नयन, लोचन, विलोचन, दृष्टि, चक्षु
- ✓ चन्द्र – इन्दु, शशि, सुधांशु, हिमांशु, राकेश, मयंक

विपरीतार्थक शब्द

किसी शब्द का विपरीत (विलोम, उलटा) अर्थ बताने वाले शब्द को विपरीतार्थक शब्द कहते हैं ।

उदाहरण :–

- प्रतिकूल – अनुकूल
- उपकार – अपकार
- आगमन – प्रस्थान
- उग्र – सौम्य
- अनुराग – विराग
- अनुरक्ति – विरक्ति
- परलोक – इहलोक
- अज्ञ – विज्ञ
- मूक – वाचाल
- कृतज्ञ – कृतघ्न
- आस्तिक – नास्तिक

अनेक शब्दों के लिए एक शब्द

- जो कुछ नहीं जानता – अज्ञ
- जानने की इच्छा – जिज्ञासा
- जो सब कुछ जानता है – सर्वज्ञ
- जो पहले हुआ – भूतपूर्व
- जो पहले कभी नहीं हुआ – अभूतपूर्व
- मरने की इच्छा – मुमूर्षा
- जीने की इच्छा – जिजीविषा
- जानने की इच्छा – जिज्ञासा
- जो अण्डे से जनमता है – अण्डज
- जो पसीने से जनमता है – स्वेदज
- जो विलम्ब से काम करे – दीर्घसूत्री
- जिसके दशमुख हैं – दशानन
- जिसका नख सूप के समान हो – शूर्पनखा
- पीने की इच्छा– पिपासा

सन्धि–समास में अन्तर

सन्धि	समास
• इसमें दो वर्णों का मेल होता है। • सन्धि में समास के नियम नहीं लगते हैं। • इसमें वर्णों का विच्छेद होता है।	• इसमें दो पदों का मेल होता है। • इसमें कभी–कभी सन्धि के नियम लागू होते हैं। जैसे – लम्ब + उदर = लम्बोदर • इसमें पदों का विग्रह होता है।

शुद्ध एवं अशुद्ध वाक्य

अशुद्ध	शुद्ध
1. बन्दूक एक बहुत ही उपयोगी अस्त्र है।	1. बन्दूक एक बहुत ही उपयोगी शस्त्र है।
2. बाघ और बकरी एक घाट पर पानी पीती है।	2. बाघ और बकरी एक घाट पर पानी पीते हैं। (बहुवचन पुलिंग क्रिया)।
3. छात्रों ने शिक्षा मंत्री को अभिनन्दन पत्र प्रदान किया।	3. छात्रों ने शिक्षा मंत्री को अभिनन्दन पत्र अर्पित किया। (प्रदान दान के लिए, बड़ों के लिए अर्पण)।
4. हमारी सौभाग्यवती कन्या का विवाह होने जा रहा है।	4. हमारी आयुष्मती कन्या का विवाह होने जा रहा है। (विवाह के बाद सौभाग्यवती)।
5. लड़का मिठाई लेकर भागता हुआ घर आया।	5. लड़का मिठाई लेकर दौड़ता हुआ घर आया। (भागना, भय या आशंका के कारण और दौड़ना साधारण अर्थ में)
6. इस समय आपकी आयु चालीस वर्ष की है।	6. इस समय आपकी अवस्था चालीस वर्ष की है। (आयु समस्त जीवन काल, अवस्था उम्र के लिए)
7. मेरा नाम श्री किशोर कुमार जी है।	7. मेरा नाम श्री किशोर कुमार है। (श्री एवं जी अहंकार सूचक)
8. आपका भवदीय।	8. आपका या भवदीय (दोनों में से एक)
9. हमारे शिक्षक प्रश्न पूछते हैं।	9. हमारे शिक्षक प्रश्न करते हैं। (प्रश्न के साथ करना क्रिया)
10. मैं आपका दर्शन करने आया हूँ।	10. मैं आपके दर्शन करने आया हूँ। (दर्शन पुलिंग बहुवचक है)
11. हम तो अवश्य ही जायेंगे।	11. हम तो अवश्य जायेंगे। (अवश्य और ही का प्रयोग एक साथ नहीं)
12. थोड़ी देर बाद वे वापस लौट आये।	12. थोड़ी देर बाद वे लौट आये। या थोड़ी देर बाद वे वापस आये।
13. हमारे यहाँ तरूण नवयुवकों की शिक्षा का अच्छा प्रबंध है।	13. हमारे यहाँ नवयुवकों की शिक्षा का अच्छा प्रबंध है। (नवयुवक एवं तरूण एक ही है)
14. मुझसे यह काम संभव नहीं हो सकता।	14. मुझसे यह काम संभव नहीं। (संभव का अर्थ हो सकना होता है)।
15. उसने मुक्त हस्त से धन लुटाया।	15. उसने मुक्त हस्त धन लुटाया या उसने मुक्तहस्त से धन दिया।
16. मैं गाने की कसरत कर रहा हूँ।	16. मैं गाने का अभ्यास कर रहा हूँ।
17. वह सकुशल पूर्वक घर आ गया।	17. वह सकुशल /कुशलपूर्वक घर आ गया।
18. उसने एक फूल की माला बनायी।	

19. ऊँची दूकान फीकी पकवान। 20. उसका प्राण सूख गया। 21. विष्णु के अनेकों नाम हैं। 22. शुद्धगाय का दूध लाभदायक होता है। 23. तमाम देश में खुशियाली छा गई। 24. तलवार बहादुर लोगों का अस्त्र है। 25. मैंने एक नाग को मारा।	18. उसने फूल की एक माला बनायी। 19. ऊँची दूकान फीके पकवान। 20. उसके प्राण सूख गए। (प्राण पुलिंग बहुवचन)। 21. विष्णु के अनेक नाम हैं। 22. गाय का शुद्ध दूध लाभदायक होता है। 23. देश भर में खुशियाली छा गई। 24. तलवार बहादुर लोगों का शस्त्र है। 25. मैंने एक नाग मारा।

गोधूलि – गद्य खंड

(भाग–2)

1.	भीमराम अंबेदकर	श्रम विभाजन और जाति प्रथा (निबंध)
2.	नलिन विलोचन शर्मा	विष के दाँत (कहानी)
3.	मैक्समूलर	भारत से हम क्या सीखें (भाषण)
4.	हजारी प्रसाद द्विवेदी	नाखून क्यों बढ़ते हैं (ललित निबंध)
5.	गुणाकर मुले	नागरी लिपि (निंबध)
6.	अमरकांत	बहादुर (कहानी)
7.	रामविलास शर्मा	परंपरा का मूल्यांकन (निबंध)
8.	पं0 बिरजू महाराज	जित–जित मैं निरखत हूँ (साक्षात्कार)
9.	अशोक वाजेपयी	आविन्यों (ललित रचना)
10.	विनोद कुमार शुक्ल	मछली (कहानी)
11.	यतीन्द्र मिश्र	नौबतखाने में इबादत (व्यक्तिचित्र)
12.	महात्मा गाँधी	शिक्षा और संस्कृति (शिक्षा शास्त्र)

गद्य खंड

सामान्य निर्देश :

आपके प्रश्न पत्र में इस खंड से कुल 20 अंकों के प्रश्न पूछे जाएँगे। आपसे अपेक्षा है कि गद्य खंड के प्रत्येक पाठ को आप समग्रता में पढ़ें और समझें। हाँ, यहाँ पर एक कोशिश है प्रत्येक पाठ के सार संकलन को आपके समक्ष रखने की, जो आपकी समझ को पुख्ता करते हुए दिए गए प्रश्नों के उत्तर देने में आपकी मदद करे। प्रश्न पत्र में जो पाठ्यपुस्तक के गद्यांश दिए जाते हैं, उनके भाव, पाठ एवं रचनाकार को समझने या चिन्हित करने में भी सार संकलन से आपको सहायता मिल सकती है।

इस खंड का आरम्भ गद्य रचनाकारों के नाम एवं उनकी रचनाओं की सूची के साथ किया गया है। इससे सम्बन्धित प्रश्न प्रायः पूछे जाते हैं।

पाठ का नाम	श्रम विभाजन और जाति प्रथा
लेखक का नाम	भीमराम अंबेदकर
विषय वस्तु मूलभूत तथ्य	जातिवाद की प्रथा युगों से चली आ रही है और उसी के आधार पर श्रम का विभाजन भी किया जाता है। जातिवाद के पोषकों के अनुसार आधुनिक सभ्य समाज कार्य कुशलता के लिए श्रम विभाजन को आवश्यक मानता है चुँकि जाति प्रथा श्रम विभाजन का ही दूसरा रूप है। विश्व के किसी भी समाज में ऐसा नहीं होता कि जाति के आधार पर श्रम का विभाजन किया जाए क्योंकि यह मनुष्य की रूचि पर आधारित नहीं है। लेखक का कहना है कि हम व्यक्तियों की क्षमता इस सीमा तक विकसित करें, जिससे वह अपने पेशा या कार्य का चुनाव स्वयं कर सके। लेकिन विडंबना यह है कि मनुष्य के गर्भधारण के समय से ही मनुष्य का पेशा निर्धारित कर दिया जाता है। भारत में प्रचलित जाति–प्रथा किसी भी व्यक्ति को उसकी इच्छा के अनुकूल पेशा चुनने की स्वतंत्रता नहीं देती। पेशा परिवर्तन की अनुमति न देकर जाति–प्रथा बेरोजगारी की प्रमुख तथा प्रत्यक्ष कारण बनी हुई है। श्रम–विभाजन मनुष्य की अपनी इच्छा पर निर्भर नहीं है। इस प्रथा में व्यक्ति को अपनी जाति के पारंपरिक पेशे से जुड़ने की बाध्यता होती है। जाति प्रथा के अंतर्गत जातिगत पारिवारिक पेशा मनुष्य की स्वाभाविक प्रेरणा, रूचि एवं आत्म शक्ति को दबा देता है। अतः आर्थिक पहलू से भी जाति प्रथा हानिकारक है।
पाठ्गत प्रश्न	1. जातिवाद के पोषक उसके पक्ष में क्या तक देते हैं? 2. जाति प्रथा समाज में श्रम विभाजन का स्वाभाविक रूप क्यों नहीं कही जा सकती? 3. जाति प्रथा भारत में बेराजगारी का एक प्रमुख और प्रत्यक्ष कारण कैसे बनी हुई है?

पाठ का नाम	विष के दाँत
लेखक का नाम	नलिन विलोचन शर्मा
विषय वस्तु मूलभूत तथ्य	विष के दाँत कहानी में उच्च, मध्यवर्ग के यथार्थ को दिखाया गया है जो निर्धन वर्ग को हीन समझता है। सेन साहब फैक्टरी के मालिक थे उनके पाँच लड़कियाँ एवं एक लड़का था। माता–पिता एवं बहनों के लाड़–प्यार ने खोखा (काशू) को बिगड़ैल बना दिया था। सेन साहब के घर के नियम सिर्फ लड़कियों के लिए थे जिसके कारण काशू मनशोख हो गया था और हर समय तोड़फोड़ करता रहता था। एक बार काशू ने मोटरकार की पिछली बत्ती का लाल शीशा चकनाचूर कर दिया तो सेन साहब ने हँसते हुए कहा कि इंजीनियर बनेगा इसीलिए तोड़ कर देख रहा है। गिरधर लाल सेन साहब की फैक्टरी में किरानी था। वह अपने परिवार के साथ आउट हाउस में रहता था उसका एक बेटा था जिसका नाम मदन था। एक दिन मदन गाड़ी छू रहा था तो ड्राइवर ने उसे धकेल दिया और वह गिर पड़ा जिसका असर उसके मन पर पड़ा। इसी कारण जब मदन को काशू के साथ खेल में लड़ाई हुई तो वह काशू पर टूट पड़ा। इस लड़ाई में क्योंकि मैं कौवों की जमात में हंस पहुँच गया था, मदन ने काशू के दो दाँत तोड़ डाले। परिणाम स्वरूप गिरधर लाल की नौकरी चली गई फिर भी वह खुश था कि उसके बेटे ने काशू के अहंकार रूपी विष के दाँत तोड़ दिए।
पाठ्गत प्रश्न	1. खोखा किन मामलों में अपवाद था? 2. विष के दाँत कहानी का सारांश लिखें। 3. काशू का चरित्र चित्रण करें। 4. कौवों की जमात में हंस पहुंचने का क्या अर्थ है? आशय स्पष्ट करें।

पाठ का नाम	भारत से हम क्या सीखें
लेखक का नाम	मैक्समूलर
विषय वस्तु मूलभूत तथ्य	'भारत से हम क्या सीखें' शीर्षक पाठ मैक्समूलर के भाषण का हिंदी अनुवाद है। इसे डा0 भवानी शंकर त्रिवेदी ने संपादित किया है। लेखक मैक्समूलर ने भारत को ज्ञान–विज्ञान, साहित्य, कला, शिक्षा, दर्शन, अध्यात्म, धर्म, संस्कृति एवं प्राकृतिक सुषमा से परिपूर्ण बतलाया है। ऐसा इसलिए कि भारत से बाहर लेखक जहाँ–जहाँ गया है, भारत जैसी संपूर्णता उन्हें भारत के अतिरिक्त कहीं नहीं दिखलाई पड़ी है। लेखक मानता है कि भारत गाँवों का देश है। यहाँ की धरती किसान और मज़दूर के पसीने से ओत–प्रोत रही है। यहाँ की संस्कृति धर्म, दर्शन, परंपरा, कृषि और प्रकृति की सुन्दरता से परिपूर्ण दिखती है। अतः लेखक की दृष्टि में सच्चे भारत के दर्शन यहीं हो सकते हैं। भारत विभिन्न धर्मों का देश है। वैदिक धर्म की उत्पत्ति भारत में हुई थी तथा इसी के साथ–साथ जैन धर्म, बौद्ध धर्म तथा पारसी धर्म की उत्पत्ति हुई। विविध धर्म एवं विचारधाराओं के कारण भारत एक विशेष देश बन गया, जहाँ सभी धर्मों का आदर और सम्मान होता रहा है।

पाठ्गत प्रश्न	1. समस्त भूमंडल में सर्वविद् सम्पदा और प्राकृतिक सौंदर्य से परिपूर्ण देश भारत है। ऐसा लेखक ने क्यों कहा है? 2. लेखक की दृष्टि में सच्चे भारत के दर्शन कहाँ हो सकते हैं और क्यों? 3. धर्मों की दृष्टि से भारत का क्या महत्व है?

पाठ का नाम	नाखून क्यों बढ़ते हैं?
लेखक का नाम	हजारी प्रसाद द्विवेदी
विषय वस्तु मूलभूत तथ्य	बार–बार काटे जाने वाले नाखूनों के बहाने हमारी सभ्यता एवं संस्कृति की विजय गाथा का उद्घाटन किया गया है। पशुता एवं मनुष्यता के अनवरत संघर्ष को प्रतीक रूप से प्रस्तुत किया गया है। नाखून मनुष्य की पाश्विक वृत्ति का प्रतीक हैं। मनुष्य पशुता को जितनी बार काटे, उसे वह मार नहीं सकता। कटने के बाद भी नाखून उगेगा ही। नाखून बढ़ना मनुष्य की सहज प्रवृत्ति है। मनुष्य नाखून काटकर पशुता काटता है। लेकिन प्रकृति ने मनुष्य को उसके शरीर में स्थित अस्त्र से वंचित नहीं किया है। अब भी वह याद दिला देती है कि तुम वही लाख वर्ष पूर्व के नख–दंत वाले और पशु के समान विचरण करने वाले जीव हो। तुम्हारे नाखूनों को भुलाया नहीं जा सकता। बाहरी उपकरणें की ताकत से मनुष्य को सुख नहीं मिल सकता। मनुष्य का सुख उसके अंदर से निकलता है। हिंसा, क्रोध, द्वेष, झूठा अभिमान, परपीड़न, लोभ और बैर को त्यागकर ही हम वास्तविक सुख प्राप्त कर सकते हैं। प्रेम सुख का सबसे बड़ा आधार है। उच्छृंखलता पशु प्रवृत्ति है और बंधन मानव प्रवृति। नाखून बढ़ने का अर्थ है पशु प्रवृति का बढ़ना और उसे नहीं बढ़ने देने का अर्थ है मानव प्रवृति का विकास। नाखून का स्वभाव है बढ़ना और मनुष्य का स्वभाव है उन्हें काटना; नाखून काटकर ही मनुष्य मनुष्य बनता है।
पाठ्गत प्रश्न	1. बढ़ते नाखूनों द्वारा प्रकृति मनुष्य को क्या याद दिलाती है? 2. मनुष्य बार–बार नाखूनों को क्यों काटता है?

पाठ का नाम	नागरी लिपि
लेखक का नाम	गुणाकर मुले
विषय वस्तु मूलभूत तथ्य	यह पाठ एक निबन्ध है जो लेखक की पुस्तक 'भारतीय लिपियों की कहानी' से लिया गया है। इसमें हिन्दी की लिपि 'देवनागरी' के ऐतिहासिक विकास की रूपरेखा स्पष्ट की गई है। करीब दो सदी पहले पहली बार इस लिपि के टाइप बनें और पुस्तकें छपने लगी। इसलिए इसके अक्षरों में स्थिरता आ गई है।

	हिन्दी तथा इसकी विविध बोलियाँ देवनागरी लिपि में लिखी जाती हैं। नेपाल की नेपाली व नेवारी एवं मराठी भाषाएँ भी इस लिपि में लिखी जाती है। गुप्तकाल की ब्राह्मी लिपि तथा सिद्धम लिपि के अक्षरों के सिरों पर छोटी आड़ी लकीरे हैं। लेकिन नागरी लिपि की पहचान यह है कि इसके अक्षरों के सिरों पर पूरी लकीरें बन जाती है और ये शिरो रेखाएँ उतनी ही लंबी रहती है जितनी की अक्षरों की चौड़ाई होती है। आठवीं नवीं सदी से नागरी लिपि का प्रचलन सारे देश में था। प्राचीन समय में काशी देवनगरी थी। संभवतः वहाँ की प्रयुक्त लिपि देवनागरी कहलाई। लंका के सिक्के पर भी नागरी अक्षर मिलते हैं। इसका प्रचलन 12वीं सदी में पूरे देश में फैल चुका था।
पाठ्गत प्रश्न	1. नागरी लिपि के अक्षरों में स्थिरता कब और कैसे आई? 2. देवनागरी लिपि में कौन कौन सी भाषाएँ लिखी जाती है? 3. ब्राह्मी और सिद्धम लिपि की तुलना में नागरी लिपि की मुख्य पहचान क्या है? 4. देवनागरी लिपि नाम कैसे पड़ा? 5. नागरी लिपि की शुरूआत कब से मानी जाती है?

पाठ का नाम	बहादुर
लेखक का नाम	अमरकांत
विषय वस्तु मूलभूत तथ्य	लेखक के परिवार में सभी भाई और रिश्तेदार अच्छे ओहदे पर थे और सभी के यहाँ नौकर थे इसीलिए लेखक को लगता है कि वे एक नौकर अपने घर में रखें। अपनी माँ से प्रताड़ित नेपाल से भागा एक बारह तेरह वर्ष का लड़का उनके सामने आ खड़ा हुआ ठिगना चकइठ शरीर गोरा रंग और चपटा मुँह। वह सफेद नेकर आधी बाँह की सफेद कमीज और भूरे रंग का जूता पहने था। गले में स्काउटों की तरह एक रूमाल बँधा था। परिवार के लोग उसे घेरकर खड़े थे। तब उनके सामने नौकर रखने का सपना तैर गया। लेखक को लगा कि उसपर भारी दायित्व आ गया है। बहादुर का गाँव नेपाल के समीप था। उसका बाप युद्ध में मारा गया था। माँ घर संभालती थी। लेकिन वह बहुत गुस्सैल थी जिसके कारण उसे बहुत मार पड़ती थी। माँ चाहती थी कि उसका बेटा घर के काम–काज में हाथ बँटाए लेकिन वह दिन भर जंगल में घूमता रहता था। छोटी सी एक भूल से एक दिन माँ ने उसे इतना मारा कि वह घर छोड़कर भाग गया और लेखक के पास पहुँच गया। बहादुर के आने से घर व परिवार के सभी सदस्यों को आराम मिलने लगा और गर्व की अनुभूति भी होने लगी। वह स्वाभिमान था। लेखक का बड़ा लड़का किशोर अपने सारे काम बहादुर से करवाता और पिटाई भी करता बाद में लेखक की पत्नी भी उसे मारने लगी।

	लेखक के घर आए दूर के रिश्तेदार के कुछ पैसे खो गए जिसका दोषी बहादुर को ठहराया गया। उसकी बहुत पिटाई हुई। इस पिटाई से उसकी आत्मा को ठेस लगी। बाद में पता चला कि रिश्तेदार के पैसे खोए नहीं थे। बार–बार मार खाने एवं गालियों के कारण उससे भूल और गलतियाँ ज्यादा होने लगी। उसका मन उचाट होता गया। अंततोगत्वा एक दिन वह लेखक का घर छोड़कर भाग गया। बहादुर के भाग जाने पर घर के सारे सदस्यों को बड़ी ग्लानी हुई।
पाठ्गत प्रश्न	1. लेखक को क्यों लगता है कि नौकर रखना बहुत ज़रूरी हो गया है? 2. बहादुर अपने घर से क्यों भाग गया था? 3. लेखक को क्यों लगता है कि जैसे उस पर एक भारी दायित्व आ गया हो? 4. अपने शब्दों में पहली बार दिखे बहादुर का वर्णन करें।

पाठ का नाम	परंपरा का मूल्यांकन
लेखक का नाम	राम विलास शर्मा
विषय वस्तु मूलभूत तथ्य	जो लोग साहित्य में युग–परिवर्तन चाहते हैं जो लकीर के फकीर नहीं बने बल्कि रूढ़ियाँ तोड़कर क्रांतिकारी साहित्य की रचना चाहते हैं, उनके लिए परम्परा का ज्ञान आवश्यक है। इससे प्रगतिशील आलोचना का विकास होता है। जिससे साहित्य की धारा मोड़ी जा सकती है। साहित्य मनुष्य के सम्पूर्ण जीवन से संबद्ध है। यह केवल विचार धारा नहीं है बल्कि इसमें मनुष्य का इन्द्रिय–बोध उसकी भावनाएँ भी व्यंजित होती हैं। साहित्य का यह पक्ष अधिक स्थायी होता है। बहुजातीय राष्ट्र की हैसियत से संसार का कोई देश भारत का मुकाबला नहीं कर सकता। क्योंकि उसकी राष्ट्रीयता किसी दूसरी जाति पर राजनीतिक प्रमुख कायम करके नहीं इतिहास और संस्कृतिक सामजस्य पर स्थापित हुई है। उसके निर्माण में रामायण, महाभारत का तथा इसमें रचयितों का महत्वपूर्ण योगदान है। इसलिए, यहाँ की साहित्यिक परम्परा का मूल्यांकन बहुत महत्वपूर्ण है।
पाठ्गत प्रश्न	1. परम्परा का ज्ञान किनके लिए सबसे ज्यादा आवश्यक है और क्यों? 2. साहित्य का कौन–सा पक्ष अपेक्षाकृत अधिक स्थायी होता है? 3. बहुजातीय राष्ट्र की हैसियत से कोई भी देश भारत का मुकाबला क्यों नहीं कर सकता?

पाठ का नाम	जित–जित मैं निरखत हूँ
लेखक का नाम	पं0 बिरजू महाराज
विषय वस्तु मूलभूत तथ्य	'जित–जित मैं निरखत हूँ' शीर्षक पाठ बिरजू महाराज पर केन्द्रित है और यह एक बातचीत के रूप में है जिसे रश्मि वाजपेयी ने कलमबद्ध किया है। बिरजू महाराज प्रसिद्ध कत्थक नर्तक हैं। वे अपने माता–पिता की अंतिम संतान थे। इनके पिताजी नृत्यकला के विशारद थे। नृत्य–संगीत में विशेष रूचि होने के कारण ये अठारह वर्ष की उम्र से ही सब को नृत्य की शिक्षा देने लगे। बिरजू महाराज विशेषकर सितार, गिटार हारमोनियम, बाँसुरी, सरोद और तबला बजाया करते थे। जब इनकी उम्र अठारह वर्ष की थी तभी इनकी शादी कर दी गई। शादी कर देने से इनके ऊपर एक और भारी बोझ आ गया तथा इनकी संगीत–साधना में व्यवधान पैदा होने लगा। इनकी संगीत–साधना अनवरत जारी रही तथा ये निरंतर प्रगति के पथ पर चलते रहे। इनके जीवन का सबसे दुखद पहलू है इनके पिताजी की मृत्यु। जिस समय इनके पिताजी की मृत्यु हुई थी, उस समय इनके पास थोड़े भी पैसे नहीं थे। पिताजी का दसवाँ (दशकर्म आदि संस्कार) कैसे किया जाय? यह भी समस्या आ खड़ी हुई। इन्हें धन जुटाने के लिए कई प्रोग्राम भी करने पड़े थे। अतः किसी प्रकार इनके द्वारा धन इकट्ठा कर पारिवारिक दायित्व की पूर्ति की गई।
पाठ्गत प्रश्न	5. बिरजू महाराज ने नृत्य की शिक्षा किसे और कब देनी शुरू की? 6. बिरजू महाराज कौन–कौन से वाद्य बजाते थे? 7. अपने विवाह के बारे में वे क्या बताते हैं? 8. बिरजू महाराज के जीवन में सबसे दुखद प्रसंग कब आया? उससे संबंधित प्रसंग का वर्णन करें।
पाठ का नाम	आविन्यों
लेखक का नाम	अशोक वाजपेयी
विषय वस्तु मूलभूत तथ्य	सुप्रसिद्ध लेखक एवं कवि अशोक वाजपेयी का गद्य एवं कविता–संग्रह है आवित्यों। आविन्यों दक्षिणी फ्रांस का एक मध्यकालीन ईसाई मठ है। लेखक एक बार वहाँ गए थे तथा वहां रहकर कविताएँ और एक गद्य की रचना की थी। वस्तुतः यह अविन्यों फ्रांस का एक प्रसिद्ध कलाकेन्द्र है जहाँ गर्मियों में हर वर्ष कला एवं रंग का आयोजन होता है। वहाँ लेखक 19 दिन रहे तथा अपने साथ हिंदी की टाइपराइटर मशीन तीन–चार पुस्तकें तथा संगीत के कैसेट भी ले गए थे। आशोक वाजपेयी को वहाँ की नदी जिसका नाम रोन है, बेहद प्रभावित करती है। नदी के प्रवाह में वह बह जाता है तथा उसे अपने कवि मित्र विनोद कुमार शुक्ल की याद आती है। कवि कभी–कभी नदी अैर कविता दोनों में ही एक–सी समानता का अनुभव करता है, नदी की प्रवाहिकता उसे सूखने नहीं देती और कविता कभी व्यक्ति की भावना एवं संवेदना को क्षीण नहीं होने देती। दोनों में यही समानता कवि को रचनाशील बना देता है। पाठ में 'प्रतीक्षा करते हैं पत्थर' हमें नया संदेश देता है। वह दृढ़ निश्चयी, स्वाभिमानी, संकल्पशील, निर्भय और धैर्यशाली है, यह गुण व्यक्ति मात्र को श्रेष्ठ बनाता है।

पाठ्गत प्रश्न	1. आविन्याके क्या है और वह कहाँ अवस्थित है? 2. हर वर्ष आविन्यों में कब और कैसा समारोह हुआ करता है? 3. लेखक आविन्यों क्या साथ लेकर गए थे और वहाँ कितने दिन रहे? 4. नदी के तट पर बैठे हुए लेखक को किसकी याद आती है? 5. नदी और कविता में कवि क्या समानता पाता है? 6. 'प्रतीक्षा करते हैं पत्थर' शीर्षक कविता से आप क्या समझते हैं?

पाठ का नाम	मछली
लेखक का नाम	विनोद कुमार शुक्ल
विषय वस्तु मूलभूत तथ्य	पिताजी ने तीन मछलियाँ खरीदी थी जिसमें से एक मछली झोले में ही मर गई थी और दो मछलियाँ जिन्दा थीं। कहानीकार मन ही मन सोच रहे थे कि पिताजी से एक मछली माँगकर कुएँ में डालकर बड़ा करेगा। संतू की दीदी ने कहा था कि मरी हुई मछली की आँखों में झाँकने से परछाई नहीं दिखती। माँ मसाला पीस रही थी। संतु को लगा कि मछली अभी मर जाएगी। यह सोचकर दोनों उदास हो गए। अचानक संतु के मन में तूफान उठा और वह एक मछली लेकर भागा। झग्गू भी मछलियाँ काटना छोड़कर संतु के पीछे भागा। झग्गु को डर था कि संतू मछली को कुँए में डाल देगा और पिताजी से उसे डाँट पड़ेगी। पिताजी दीदी को किसी बात पर मारे थे। दीदी अपने कमरे में सिसक रही थी और पिताजी गुस्से में थे। पूरा घर मछलियों के गंध से भरा हुआ था। संतु की दीदी बहुत सुंदर थी। संतू को दीदी ने अपने हाथों से अच्छे–अच्छे कपड़े पहनाए थे। परिवार में दीदी के अरमानों का गला घोंटा जाता है पर वह उसका विरोध नहीं कर सकती। उसे पीटा जाता है क्योंकि वह किसी से प्रेम करती है, रोना ही उसकी जिंदगी का सबसे बड़ा सच है। 'मछली' भारतीय नारी की प्रतीक है। मछली बेजुबान होती है, कोई उसे मनोरंजन के लिए, खाने के लिए पकड़े, वह विरोध नहीं करती। वह निर्बल मूक और परतंत्र है।
पाठ्गत प्रश्न	1. मछलियों को लेकर बच्चों की अभिलाषा क्या थी? 2. संतू क्यों उदास हो गया? 3. मछली और दीदी में क्या समानता दिखलाई पड़ी? स्पष्ट करे।

पाठ का नाम	नौबतखाने में इबादत
लेखक का नाम	यतींद्र मिश्र
विषय वस्तु मूलभूत तथ्य	यतींद्र मिश्र की रचना 'नौबतखाने में इबादत' प्रसिद्ध शहनाई वादक बिस्मिल्ला खाँ के जीवन पर लिखी गई है। इनका जन्म डुमराँव, बिहार के एक परिवार में हुआ था जहाँ पहले से संगीत का वातावरण था। इस लिए आज डुमराँव की महत्ता बिस्मिल्ला खाँ की वजह से है। ये सजदे में यानी पूजा–स्थल पर नमाज के बाद गिड़गिड़ाकर प्रार्थना करते थे कि ऐ खुदा ऐ

	मेरे मालिक मुझे केवल एक सुर दे, ऐसा सुर (स्वर) कि सुनने वाले वाह–वाह कर सकें और आगे चलकर उनकी यह मुराद पूरी होती है, यह सारा जगत जानता है। बड़े होने पर ये प्रसिद्ध शहनाई वादक बने। काशी की पवित्र नगरी में जब ये शहनाई बजाते थे, तो सबसे पहले भगवान विश्वनाथ और बालाजी के मंदिर की ओर मुँह करके बजाते थे, मानों वे उनकी आराधना कर रहे हों। इस तरह वे हिन्दू–मुस्लिम एकता को बनाए रखने वाले थे तथा इनकी आस्था सांप्रदायिक सद्‌भाव में भी थी। बिस्मिल्ला खाँ का मतलब ही है – बिस्मिल्ला खाँ की शहनाई की जादुई आवाज, जिसका असर सिर चढ़कर बोलने लगता है। वे एक समर्पित कलाकार थे, उनमें सादगी, सरलता और विनम्रता तीनों थी। वे हमेशा अपने आपको अल्पज्ञ और विनम्र रूप में दिखलाया करते थे। इसलिए जब बिस्मिल्ला खाँ शब्द कानों में गूँजता है तब बिस्मिल्ला खाँ का व्यक्तित्व शहनाई की आकृति और उसके मधुर संगीत में खो जाता है और चहुँओर केवल शहनाई ही दिखलाई पड़ती है।
पाठ्‌गत प्रश्न	1. डुमराँव की महत्ता किस कारण से है? बिस्मिल्ला खाँ सजदे में किस चीज के लिए गिड़गिड़ाते थे? 2. बिस्मिल्ला खाँ जब शहनाई बजाते थे तो सबसे पहले क्या करते थे। इससे हमें क्या शिक्षा मिलती है? 3. 'बिस्मिल्ला खाँ का मतलब–शिक्षा बिस्मिल्ला खाँ की शहनाई।' एक कलाकार के रूप में बिस्मिल्ला खाँ का परिचय पाठ के आधार पर दें।

पाठ का नाम	शिक्षा और संस्कृति
लेखक का नाम	महात्मा गाँधी
विषय वस्तु मूलभूत तथ्य	यह लेख गाँधी जी द्वारा संपादित 'हरिजन' और 'यंग इंडिया' नामक पत्रिका का श्रेष्ठ लेख है। इसमें वे अहिंसक प्रतिरोध को सबसे बढ़िया शिक्षा मानते थे। उनकी दृष्टि में वर्णमाला एवं सांसारिक ज्ञान से पूर्व प्रेम, सत्य एवं आत्मा में निहित शक्तियों के बारे में जाने। शिक्षा से गाँधी जी का अभिप्राय था कि बच्चे के शरीर, बुद्धि और आत्मा के सभी गुणों को समाहित किया जाय। तालीम शुरू करते ही दस्तकारी और छोटे–छोटे उद्योगों की जानकारी दी जाय। तभी आत्मा और मस्तिष्क का उच्चतम विकास संभव है। बच्चे के सर्वांगीण विकास के लिए यह आवश्यक है। दस्तकारी या उद्योग की शिक्षा से मनुष्य स्वावलंबी होता है। आज का भारत सभी जातियों, धर्मों और संस्कृतियों का संगम है। अच्छी बातों को ग्रहण करना और व्यर्थ रीति–रिवाजों को छोड़ देना यहाँ की विशेषता है। वे विदेशी भाषाओं का बड़े पैमाने पर अनुवाद आवश्यक मानते थे। वे चाहते थे कि संसार की भाषाओं में जो ज्ञान सामग्रियाँ भरी पड़ी हैं उसे राष्ट्र अपनी देशी भाषा के ज्ञान द्वारा प्राप्त करें। हिन्दू धर्म के बारे में उनका मानना था कि हमारा धर्म सभी धर्मों की इज्जत करता है। वह कैदखाने का धर्म नहीं है।

पाठ्गत प्रश्न	1. गाँधी जी बढ़िया शिक्षा किसे कहते हैं? 2. गाँधी जी शिक्षा का अभिप्राय किसे मानते हैं? 3. मस्तिष्क और आत्मा का उच्चतम विकास कैसे संभव है? 4. गाँधी जी कताई, धुनाई, दस्तकारी जैसे ग्रामोद्योगों के द्वारा सामाजिक क्राँति कैसे संभव मानते हैं? 5. गाँधी जी देशी भाषाओं में बड़े पैमाने पर अनुवाद कार्य क्यों आवश्यक मानते थे?

गोधूलि – काव्य खंड

विषय–सूची

क्र.	कवि	पाठ
1.	गुरु नानक	राम बिनु बिरथे जगि जनमा, जो नर दुख में दुख नहिं मानै
2.	रसखान	प्रेम–अयनि श्री राधिका, करील के कुंजन ऊपर वारौं
3.	घनानंद	अति सूधो सनेह को मारग है, यो अँसुवानिहिं लै बरसौ
4.	प्रेमघन	स्वदेशी
5.	सुमित्रानंदन पंत	भारत माता
6.	रामधारी सिंह दिनकर	जनतंत्र का जन्म
7.	स0 ही0 वात्स्यायन 'अज्ञेय'	हिरोशिमा
8.	कुँवर नारायण	एक वृक्ष की हत्या
9.	वीरेन डंगवाल	हमारी नींद
10.	अनामिका	अक्षर–ज्ञान
11.	जीवनानंद दास	लौटकर आऊँगा फिर
12.	रेनर मारिया रिल्के	मेरे बिना तुम प्रभु

कवि का नाम	गुरुनानक
पाठ का नाम	पद–1
विषय वस्तु मूल भूत तथ्य	गुरुनानक कहते हैं कि यदि हमने राम का नाम न लिया तो हमारा जन्म व्यर्थ है। बिना राम नाम के हम केवल विष खाते हैं, और हमारी वाणी भी विष के समान होती है। राम नाम के बिना जीवन निष्फल है। इसके बिना मति भ्रमित रहती है। गुरु के सबद सीख के बिना प्राणी की मुक्ति संभव नहीं है। राम नाम के बिना वह उलझ कर मर जाएगा। व्यक्ति दंड, कमंडल, शिक्षा, जनेउ, तीर्थ गमन आदि में भटकता रहता है। किंतु राम नाम के बिना उसे शांति नहीं मिलती। जो हरि का नाम लेते हैं, वे ही इस संसार को पार पा सकते हैं। जटाधारण करना, शरीर पर भस्म लगाना, वस्त्र छोड़ देना आदि सब व्यर्थ है। इस संसार में जल, थल अथवा आकाश में जितने भी जीव हैं, सभी उन्हीं की कृपा से जीवित हैं। नानक कहते हैं कि उन्होंने हरिरस अर्थात ईश्वर की भक्ति का सम्मान पूर्ण रूप से कर लिया है।
प्रश्न	1. कवि किसके बिना जगत् में यह जन्म व्यर्थ मानता है, वाणी कब विष के समान हो जाती है? 2. नाम–कीर्तन के आगे कवि किन कर्मों की व्यर्थता सिद्ध करता है? 3. हरिरस से कवि का अभिप्राय क्या है?

कवि का नाम	गुरुनानक
पाठ का नाम	पद–2
विषय वस्तु मूल भूत तथ्य	नानक कहते हैं कि जो मनुष्य दुख में दुखी नहीं होता, जो सुख स्नेह और भय से प्रभावित नहीं होता जो सोना को मिट्टी समझता है, जो निंदा और प्रशंसा को समान भाव से लेता हो, जिसे न लोभ हो, न मोह और न ही अभिमान; हर्ष–शोक एवं मान–अपमान से जो परे हो, जिसने सांसारिक इच्छाओं को अपने मन से त्याग दिया हो, जिसके भीतर न काम उत्पन्न हो और न ही क्रोध, उसी शरीर में ब्रह्म का निवास होता है। गुरू की कृपा जिन पर होती है वे ही इस युक्ति को पहचान सकते हैं। नानक कहते हैं कि वे गोविन्द में इस तरह लीन हैं, इस तरह अभिन्न हैं जैसे पानी में पानी मिला हो।
प्रश्न	1. कवि की दृष्टि में ब्रह्म का निवास कहाँ है? 2. गुरू की कृपा से किस युक्ति की पहचान हो पाती है?

कवि का नाम	रसखान
पाठ का नाम	दोहे
विषय वस्तु मूल भूत तथ्य	दोहा–I : रसखान कहते हैं कि श्री राधा प्रेम का खजाना है और श्री कृष्ण प्रेम के रंग में पूरी तरह रंगे हुए हैं। ये दोनों प्रेम वाटिका के माली और मालिन हैं।
प्रश्न	कवि ने माली–मालिन किन्हें कहा है?
विषय वस्तु मूल भूत तथ्य	दोहा–II : इस दोहे में गोपियों के स्वर में रसखान कहते हैं कि कृष्ण के रूप–सौंदर्य को देख कर आँखें अपने वश में नहीं रहीं। जिस तरह धनुष से खींचा हुआ वाण छूटकर चला जाता है, उस पर वश नहीं रहता, आँखों की भी यही स्थिति है।
विषय वस्तु मूल भूत तथ्य	दोहा–III : राधा के स्वर में रसखान इस दोहे में कहते हैं कि चितचोर कृष्ण मेरे मन रूपी रत्न को चुरा ले गए हैं। अब बिना मन की मैं क्या करूँ, मैं तो उसके फेर अर्थात प्रेम के फंद (बंधन) में बंध चुकी हूँ।
प्रश्न	कृष्ण को चोर क्यों कहा गया है?
विषय वस्तु मूल भूत तथ्य	दोहा–IV : राधा के स्वर में रसखान कहते हैं कि जिस दिन से प्रिय कृष्ण से आँखे लगी हैं, मेरे मन में चितचोर कृष्ण बस गए हैं और मैं पलकों की ओट भी नहीं कर सकी हूँ।

कवि का नाम	रसखान
पाठ	सवैया
विषय वस्तु मूल भूत तथ्य	रसखान इस सवैया में कहते हैं कि कृष्ण की लाठी और कंबल पर तीनों लोकों का राज न्यौछावर है। नन्द की गायों को चराने के सुख के समक्ष आठों सिद्धि और नौ निधियों का सुख तुच्छ है। रसखान कहते हैं कि कब उन्हें ब्रज के वन–बाग, तालाब देखने का अवसर मिलेगा। वे इसके लिए लालायित हैं। वे कहते हैं कि ब्रज के करील के कुंजों के समक्ष इंद्र के करोड़ों स्वर्ग न्यौछावर है।
प्रश्न	कवि कैसे आकांक्षा प्रकट करते हैं?

कवि का नाम	घनानंद
पाठ	अतिसूधो स्नेह को मारग है।
विषय वस्तु मूल भूत तथ्य	घनानंद ने प्रेम के मार्ग को बड़ा ही सरल एवं सीधा कहा है। इस मार्ग में तनिक भी चतुराई एवं टेढ़ापन नहीं है। सरल हृदय वाले अपने अभिमान को त्यागकर इस मार्ग पर चलते हैं, किन्तु कपटी लोग इस मार्ग पर चलने से झिझकते हैं। घनानंद के अनुसार कोई अन्य चिन्ह नहीं है। यहाँ गोपियाँ उलाहना के स्वर में कहती है कि तुमने कौन सा पाठ पढ़ा है, जिसमें लेने के लिए मन भर तैयार रहते हो जबकि छटांक भर भी देने को तैयार नहीं हो। तुमने छल का पाठ पढ़ा है।
प्रश्न	1. कवि प्रेममार्ग को अतिसूधो क्यों कहता है? 2. 'मन लेहू पे देहू छटाँक नहीं' से कवि का क्या अभिप्राय है?

कवि का नाम	घनानंद
पाठ	मो अँसुवानिहिं लै बरसौ
विषय वस्तु मूल भूत तथ्य	मेघ को संबोधित करते हुए कवि कहते हैं कि हे मेघ! तुम दूसरों की भलाई के लिए देह धारण करते हो। तुम अपने यथार्थ को दर्शाओ। तुम अपनी सज्जनता का परिचय दो। तुम अपने जल को अमृत तुल्य कर दो। घनानंद कहते हैं कि हे जीवनदायक मेरे हृदय की पीड़ा को समझो। मेरे आँसुओं को तुम उस विश्वासी सुजान के घर बरसाओ ताकि वह मेरी पीड़ा को समझे।
प्रश्न	1. द्वितीय छंद किसे संबोधित है और क्यों? 2. परहित के लिए कौन देह धारण करता है? 3. कवि अपने आँसुओं को कहाँ पहुँचाना चाहता है और क्यों?

कवि का नाम	बदरीनारायण चौधरी 'प्रेमघन'
पाठ	स्वदेशी
विषय वस्तु मूल भूत तथ्य	'स्वदेशी' शीर्षक पाठ में कवि ने भारत की तत्कालीन स्थिति का चित्रण किया है। कवि को भारत में भारतीयता नजर नहीं आती है। भारतीयों को देखकर कोई पहचान नहीं सकता है कि वे हिन्दू, मुसलमान अथवा इसाई हैं। भारतीयों को परदेश की चाल चलन भा गई है। उनके पहनावे, खान–पान, रहन–सहन में भारतीयता लुप्त हो चुकी है। हिंदू लोग हिंदी के बजाय अंग्रेजी बोलना पसंद करते हैं। उनके घरों में विदेशी वस्तुओं की भरमार है। हिन्दुस्तानी नाम सुनकर वह लजा जाते हैं। भारतीय होकर भी भारतीय वस्त्र से घृणा करते हैं। हाट बाजार सभी जगह विदेशी माल दिखाई पड़ते है कवि नेताओं पर व्यंग्य करते हुए कहते हैं कि जिनके अपने वस्त्र नहीं संभलते हैं भला वे देश का क्या ख्याल रख पायेंगे। चारों वर्गों के लोगों में दासवृति की चाह बढ़ गई है। वे शासक वर्ग की झूठी प्रशंसा में लगे रहते है, मानों वे डफाली बन गए है।
प्रश्न	1. कविता के शीर्षक की सार्थकता स्पष्ट कीजिए। 2. कवि को भारत में भारतीयता क्यों नहीं दिखाई पड़ती? 3. कवि नगर, बाजार और अर्थव्यवस्था पर क्या टिप्पणी करता है? 4. नेताओं के बारे में कवि की क्या राय है? 5. कवि ने डफाली किसे कहा है और क्यों?

कवि का नाम	सुमित्रानन्दन पंत
पाठ	भारतमाता
विषय वस्तु मूल भूत तथ्य	इस कविता में कवि ने कहा है कि भारतमाता गाँवों में निवास करती है। गरीबी ने उसे चेतनाहीन बना दिया है। वह अपने ही घर में प्रवासिनी बन गयी है। भारतमाता की संतान अर्द्धनग्न, भूखी, अशिक्षित एवं मूढ़ है। गंगा–यमुना रूपी दोनों आँखों में आँसू भरे हैं। गीता प्रकाशनी भारत माता की तपस्या सफल हुई है। उसने भारतीयों के विकास की राह दिखाई है। जग–जननी भारत माता में जीवन को विकसित करने की प्रेरक शक्ति है।
प्रश्न	1. भारतमाता अपने ही घर में प्रवासिनी क्यों है? 2. कविता में भारतवासियों का कैसा चित्र खींचा गया है?

कवि का नाम	रामधारी सिंह दिनकर
पाठ	जनतंत्र का जन्म
विषय वस्तु मूल भूत तथ्य	रामधारी सिंह दिनकर की प्रसिद्ध कविता है जनतंत्र का जन्म, जिसमें कवि ने सदियों की पराधीनता के बाद प्राप्त स्वतंत्रता का वर्णन किया है। कवि के अनुसार शोषण–उत्पीड़न की परंपरा खत्म हो चली है और अब जनता का शासन आनेवाला है। समय के रथ के पहिए की घर्घरनाद से सम्पूर्ण परिवेश आंदोलायमान है। ऐसा लगता है अब जनता शीघ्र सिंहासनारूढ़ होने वाली है। पहले की जनता शोषित–पीड़ित बिल्कुल मिट्टी की अबोध मूरतों की तरह थी, लेकिन अब समय बदल गया है। सिंहासन की वास्तविक हकदार जनता है। जनता ने वर्षों से भारत में फैले घनीभूत अंधकार को अपने अपूर्व तेजस्विता और दाहकता से समाप्त कर दिया है। जनता के इन तेजस्वी सपनों ने युग–युग से पूँजीभूत घोर अंधकार को भी छिन्न–भिन्न कर दिया है। भारत वर्ष का जनतंत्र तैंतीस करोड़ भारतवासियों से समन्वित है। वह विशाल और विराट है। कवि उन तैंतीस करोड़ जनता के सिर पर मुकुट धारण करने की बात करता है। ताकि वे आत्मनिर्भर, प्रसन्नचित्त एवं स्वाधीन बन सकें। कवि की दृष्टि में आज के देवता मंदिर और देवालयों में नहीं मिल सकते, बल्कि वे खेतों और खलिहानों में ही मिल सकेंगे। यानी यहाँ के जो मेहनतकश मजदूर और किसान हैं, वही सही अर्थों में आज के देवता हैं। अतः समय के रथ का घर्घरनाद अब चारों ओर सुनाई पड़ने लगा है। अब जनता शासन करने हेतु आगे बढ़ रही है अब सिंहासन खाली करना होगा, क्योंकि अब लोकतंत्र का जन्म होने वाला है।
प्रश्न	1. कवि की दृष्टि में समय के रथ का घर्घर–नाद क्या है? स्पष्ट करें। 2. कविता के आरंभ में कवि भारतीय जनता का वर्णन किस रूप में करता है? 3. कवि जनता के स्वप्न का किस तरह चित्र खींचता है? 4. विराट जनतंत्र का स्वप्न क्या है? 5. कवि किनके सिर पर मुकुट धरने की बात करता है और क्यों? 6. कवि की दृष्टि में आज के देवता कौन हैं? वे कहाँ मिलेंगे?

कवि का नाम	स0 ही0 वात्स्यायन 'अज्ञेय'
पाठ	हिरोशिमा
विषय वस्तु मूल भूत तथ्य	इस कविता में अज्ञेय जी ने द्वितीय विश्व युद्ध में (छह अगस्त 1945) को अमरीका के बम–वर्षक विमान द्वारा जापान के हिरोशिमा नगर पर बम गिराये जाने तथा उगते हुए सूर्य का देश कहलाने वाले जापान के विनष्ट हो जाने का वर्णन किया गया है। कितनी लाशें बिछीं और कितने लोग भाप बन कर उड़ गये। हिरोशिमा में कभी मानवों का निवास था। इसकी साक्षी जली हुई मानव की छाया है। मानव द्वारा रचित सूरज और कुछ नहीं अणुबम है। मानव की रचनात्मक शक्ति के दुरुपयोग के परिणाम आज हमारे हमारे सामने हैं। कवि यह स्पष्ट करना चाहते हैं कि आधुनिक सभ्यता की यह सोच हमें विनाश की ओर ले जा रही हैं।

प्रश्न	1. हिरोशिमा कविता में कवि ने किस सूरज का उल्लेख किया है? 2. हिरोशिमा में मनुष्य की सांखी रूप में क्या है?

कवि का नाम	कुँवर नारायण
पाठ	एक वृक्ष की हत्या
विषय वस्तु मूल भूत तथ्य	यह कविता पर्यावरण एवं मानव सभ्यता के विनाश की अन्तः व्यथा है तथा पर्यावरण की चिंता से जुड़ी है। कवि जब भी बाहर से आते हैं तो उन्हें बाहर खड़ा बूढ़ा वृक्ष एक पहरेदार–सा लगता है जो उनसे दूर से ही पूछता है कौन और कवि उसे दोस्त कह कर सम्बोधित करते हैं और वे कुछ देर उसकी छॉव में बैठते हैं पर कुछ स्वार्थी लोग उस वृक्ष को काटकर उसकी बलि चढ़ा देते हैं, वृक्ष की हत्या के बाद कवि को आशंका होती है, लुटेरे कहीं उसके घर को शहर व देश को न लूट ले। कवि कहता है कि यदि हमें हवा को धुँआ होने से, खाने को जहर होने से और जंगल को मरूस्थल होने से बचाना है तो वृक्षों की कटाई को रोकना होगा। पर्यावरण को बचाना होगा क्योंकि यह हमारा रक्षक है।
प्रश्न	1. कवि को बूढ़ा वृक्ष चौकीदार क्यों लगता है? 2. वृक्ष और कवि में क्या संवाद होता है? 3. घर, शहर और देश के बाद कवि किन चीजों को बचाने की बात करते हैं?

कवि का नाम	वीरेन डंगवाल
पाठ	हमारी नींद
विषय वस्तु मूल भूत तथ्य	कवि इस कविता में बताता है कि रात भर की नींद में कई परिवर्त्तन होते हैं। रात में हम आराम से सोते हैं लेकिन उसी रातभर में पेड़–पौधे कुछ इंच बढ़ते हैं, बीज अंकुरित होता है तथा उसी रात भर में मक्खी भी जन्म लेती है और मर भी जाती है। नींद में सृजनरत संसार अपना काम अनवरत जारी रखते है लेकिन हमें पता नहीं चलता। धनी आदमी बेफिक्र होकर खूब सोता है, जबकि निर्धन, गरीब, शोषित जन दुखी ही बने रहते हैं। अनेक बच्चे जन्म लेते हैं और अल्पकाल में विभिन्न कारणों से मर जाते हैं। संपन्न वर्ग वालों ने अपनी सुख–सुविधा के लिए सारी चीजें जमा कर रखी है जबकि अभाव में जीनेवाले लोगों की समस्याएँ निरंतर बढ़ती रहती हैं। समाज में कई ऐसे लोग हैं जो कभी आगे बढ़कर मदद नहीं करते, साफ इनकार कर जाते है। कवि अपने आस–पास की गरीब बस्तियों का उल्लेख करता है, जिसमें उनकी पीड़ा एवं संघर्ष दोनों दिखलाई पड़ते हैं। ऐसे व्यक्ति शोषित, पीड़ित होते हैं तथा निरंतर संघर्ष के साथ आगे बढ़ते हैं। कवि बताते हैं कि समाज में कुछ शोषक वर्ग हैं, जो साम्प्रदायिक दंगे फैलाते हैं, बमबारी करते हैं तथा लोगों की हत्याएँ भी करते हैं। हमें अब नींद में सोए नहीं रहना है, भाग्य के भरोसे पड़े नहीं रहना है। अब हम सब बहुत सो चुके, अब नींद से जगने का समय आ गया है।

प्रश्न	1. मक्खी के जीवन–क्रम का कवि द्वारा उल्लेख किए जाने का क्या आशय है? 2. इनकार करना न भूलने वाले कौन हैं? 3. कवि गरीब बस्तियों का क्यों उल्लेख करता है? 4. कवि किन अत्याचारियों का और क्यों जिक्र करता है?

कवि का नाम	अनामिका
पाठ	अक्षर–ज्ञान
विषय वस्तु मूल भूत तथ्य	अनामिका द्वारा रचित 'अक्षर–ज्ञान' एक रोचक कविता है, जिसमें एक ऐसे बालक का चित्रण है, जो पहले पहल ककहरा सीख रहा है। ऐसा लगता है यहाँ कवयित्री माँ बन गई है उसका शिशु कविता का अबोध बालक। माँ अपने अबोध बालक को ककहरा लिखना सिखलाती है। जैसे–हमारे साथ भी हुआ था। ककहरा सीखने के क्रम में 'क' से 'कबूतर', 'ख' से 'खरहा', 'ग' से 'गमला', 'घ' से 'घड़ा' चित्र के साथ सिखलाया जाता है। ककहरा की किताब में इसके चित्र भी होते हैं ताकि वह मन लगाकर सीख सके। कविता में बालकों की चंचलता की ओर भी इशारा किया गया है जहाँ बच्चे का ध्यान क, ख, ग, घ लिखने पर कम उससे बनने वाले शब्दों के चित्र पर अधिक रहता है। फलतः वह लिखने के क्रम में गलती करता रहता है। हम जानते हैं कि 'ङ' अक्षर से बननेवाला कोई चित्र किताब में नहीं रहता। इससे बच्चे की परेशानी बढ़ जाती है। 'ङ' के बारे में कोई कुछ नहीं बताता तो वह खुद ही निकाल लेता है कि 'ङ' में दो हिस्सा है। 'ड' और फिर (.)। उसे 'ड' माँ लगता है और (.) उसकी गोदी में टिका हुआ बच्चा। लेकिन यह 'ङ' लिखने में उसे काफी परेशानी होती है। बच्चा नहीं लिख पाने के कारण रोता है उसके आँसू बह निकलते हैं। ये आँसू कवयित्री को भीतर तक प्रभावित करता है उसे लगता है कि ये आँसू ही शायद सृष्टि की विकास कथा का पहला अक्षर है। कवयित्री सोचती है कि बच्चा कोई अक्षर ठीक से नहीं लिख पाता। कोई अक्षर चौखटे यानी लिखनेवाले खाने (चौकोर बनाया गया स्थान) में अँट नहीं पाता। बाहर निकल जाता है। ऐसे में कवयित्री को लगता है कि यह क फुदक कर कबूतर की तरह इधर–उधर चला गया है यही बात गमले, खरहे, घड़े पर भी लागू होती है जहाँ शब्द–चित्र के रंगीन दृश्य में छोटे बालक का मन भटक जाता है। इस कविता में बच्चे की विफलता के आँसू निराशा के सूचक हीं हैं, बल्कि इसमें आशा है वह आशा ही बालक को बार–बार सीखने के लिए मजबूर करती है, सृष्टि के विकास में भी आशा है और इसी में जीवन–संघर्ष भी है।
प्रश्न	1. बेटे के लिए 'ङ' क्या है और क्यों? 2. 'अक्षर ज्ञान' कविता में 'क' और 'ख' का विवरण प्रस्तुत करें। 3. 'अक्षर ज्ञान' कविता किस तरह हमारे भीतर आशा और सान्त्वना को जगाती है? 4. कविता में तीन उपस्थितियाँ है। स्पष्ट करें कि वे कौन–कौन सी है?

कवि का नाम	जीवनानंद दास
पाठ	लौटकर आऊँगा फिर
विषय वस्तु मूल भूत तथ्य	बंगला के चिर परिचित कवि जीवनानंद दास की प्रसिद्ध कविता 'लौटकर आऊँगा फिर' एक देशभक्ति की भावना से ओत–प्रोत कविता है। इस कविता में कवि अपनी मातृभूमि से बहुत प्यार करता है। उसकी जन्मभूमि बंगाल रही है और फिर मरने के बाद वहीं जन्म लेने की इच्छा व्यक्त करता है। कवि उस बंगाल में लौटकर आने की बात करता है, जहाँ नदियाँ बहती हैं तथा उसके किनारे धान की फसलें लहलहाती है। कवि अगले जन्म में कौआ, हंस, उल्लू और सारस बनने की संभावना व्यक्त करता है। कवि मानता है कि मरते समय आदमी जो कुछ सोचता है, वही बनता है। इसलिए कवि यही सोचता है कि मैं छोटी चिड़िया बनूँ जिसे 'अबाबील' कहा जाता है तथा जो खंडहरों में अपना घोंसला बनाया करती हैं। कवि चाहता है कि मैं बिल्कुल उसी रूप में सर्वत्र भ्रमण करूँ।
प्रश्न	1. कवि किस तरह के बंगाल में एक दिन फिर लौटकर आने की बात करता है? 2. कवि अगले जन्म में क्या–क्या बनने की संभावना व्यक्त करता है?

कवि का नाम	रेनर मारिया रिल्के
पाठ	मेरे बिना तुम प्रभु
विषय वस्तु मूल भूत तथ्य	प्रस्तुत कविता 'मेरे बिना तुम प्रभु' एक रहस्यवादी कविता है, जिसमें एक भक्त कहता है कि मैं हूँ इसीलिए आप हैं, मैं न रहूँगा, तो आपकी सत्ता नहीं रहेगी। भक्त ही प्रभु को सुख देता है। यह कविता कवि द्वारा अपने प्रभु को संबोधित है, जिसमें कवि का कथन है कि आप मुझमें निवास करते हैं। कवि अपनी बात आगे बढ़ाता है कि बिना भक्त भगवान भी एकाकी और निरूपाय हो जाएँगे, भक्त भगवान का बेटा है, उसकी वृत्ति है, भक्त के बिना भगवान गृह–विहीन तथा अकेले–थकेले पड़ जायेंगे। भक्त ही प्रभू का स्वागत करता है। भगवान् भी अपने भक्तों पर अपनी कृपा दृष्टि बरसा कर अत्यंत सुख–शांति का अनुभव करता है। भक्त नहीं रहेंगे तो भगवान् को भी सुख कहाँ से नसीब होगा? इस कविता में कवि ने भक्त और भगवान् को एक दूसरे का पूरक माना है। कवि की दृष्टि में भक्त के लिए भगवान का होना जरूरी है और भगवान के लिए भक्त का होना भी परम आवश्यक है। यह कोई कवि ही कल्पना कर सकता है कि भक्त के बिना उनके चरण चल नहीं सकते। भगवान् को जीवित रखने के लिए भक्त की भक्ति ही काम आती है ताकि उनका अस्तित्व बना रहे।
प्रश्न	1. कविता किस के द्वारा किसे संबोधित है? आप क्या सोचते हैं? 2. कविता के आधार पर भक्त और भगवान के बीच के संबंध पर प्रकाश डालिए। 3. 'मेरे बिना तुम प्रभु' कविता में कवि के भाव स्पष्ट करें। 4. 'मेरे बिना तुम प्रभु' कविता का सांराश अपने शब्दों में लिखें।

वर्णिका

वर्णिका आपकी पूरक पाठ्यपुस्तक है। इस पुस्तक से कुल 10 अंक के प्रश्न पूछे जाते हैं। प्रश्नों की संख्या 3 होती है। इनमें कहानी की कथा–वस्तु, पात्र एवं शीर्षक से संबंधित सवाल होते हैं।

लेखक का नाम	श्री निवास
पाठ का नाम	दही वाली मंगम्मा
विषय वस्तु मूल भूत तथ्य	बेंगलूर शहर में रहनेवाली एक स्त्री यह कहानी सुनाती है। वह एक बच्चे की माँ है। मंगम्मा नाम की स्त्री अपने गाँव से रोज दही लेकर बेंगलूर आती है और उसके घर भी दे जाती है। मंगम्मा का पति गुजर चुका है। वह एक बेटे की माँ है और एक पोते की दादी। एक दिन उसकी बहू ने किसी बात पर अपने बेटे को पीट दिया। मंगम्मा ने इस पर बहू को टोका तो बात बढ़ गई और इतनी बढ़ी कि बेटे बहू और मंगम्मा ने अपने खान–पान आदि अलग कर लिया। उसी गाँव के रंगप्पा की नजर मंगम्मा के धन पर थी। वह बेटे बहू के खिलाफ मंगम्मा के कान भरने लगा। उसने मंगम्मा से कर्ज के तौर पर रूपए माँगे। रंगप्पा गाँव में बदनाम था। मंगम्मा उससे डरने लगी पर घर में उसने यह बात न बतायी। इस बीच उसका पोता उसी के साथ रहने की जिद करने लगा। वह माँ–बाप के पास जाने को तैयार न था। मंगम्मा इस बात से खुश थी कि बेटा न सही, पोता तो उसके पास है। पर अब उसकी समस्या दही बेचने जाने की थी। वह दही और बच्चे दोनों को लेकर नहीं जा सकती थी। बच्चे को वह माँ के पास छोड़कर गई किंतु दो दिनों के बाद बच्चे ने भी बेंगलूर जाने की जिद पकड़ ली। मंगम्मा ऐसा नहीं कर सकती थी। उसके बेटे और बहू ने अपनी गलती मान ली और उससे अपना गुस्सा छोड़ देने के लिए कहा। मंगम्मा भी मान गई। सास का काम अब उसकी बहू ने सँभाल लिया। मंगम्मा घर पर रहती और बहू दही बेचने जाती। पोता भी दादी के पास यूँ ही नहीं गया था, कहीं नाराज मंगम्मा के पैसे न हड़प ले, इसलिए उसने पोते को दादी के पास भेज दिया था ताकि घर के लिए उसकी ममता बनी रहे और वह मान जाए। अंत में कहानीकार बताता है कि माँ, बेटे और बहू की यह कहानी केवल मंगम्मा के घर की नहीं, बल्कि हर घर की है।
प्रश्न	1. मंगम्मा का अपनी बहू के साथ किस बात को लेकर विवाद था? 2. रंगप्पा कौन था और मंगम्मा से क्या चाहता था? 3. बहू ने सास को मनाने के लिए कौन सा तरीका अपनाया? 4. इस कहानी का कथावाचक कौन है? उसका परिचय दीजिए। 5. मंगम्मा का चरित्र चित्रण कीजिए। 6. कहानी का सारांश प्रस्तुत कीजिए।

लेखक का नाम	सातकोड़ी होदा
पाठ का नाम	ढहते विश्वास
विषय वस्तु मूल भूत तथ्य	यह कहानी लक्ष्मी की है। कलकत्ता में कमानेवाला उसका पति लक्ष्मण घर पर पैसे भेजता है और वह खुद भी तहसीलदार के घर काम करके कुछ पा लेती है। उसके गाँव में विपत्ति एक एक कर आ रही थी। पहले तूफान आया फिर सूखा और अब बाढ़ के आने का भय था। भादो का महीना था

	और महीने के शुरू से ही वर्षा हो रही थी। उसका घर देवी नदी के बाँध के नीचे था। उसे डर लगा रहता कि यदि यह दलेइ बाँध टूट गया तो कुछ न बचेगा। वह जब नई नई ब्याह कर आई थी तो दलेइ बॉुध के टूटने पर आई तबाही देख चुकी थी। उसने कई बाढ़, सूखा और तूफान देखे हैं और इंसान को उन सबसे लड़ते भी देखा है पर इस बार वह डरी हुई थी। उसके पड़ोस का लड़का गुणनिधि दूसरे लड़कों के साथ दलेइ बाँध को बचाने की कोशिश में लगा था। लक्ष्मी का बड़ा बेटा अच्युत भी उसके साथ था। गाँव के बूढ़े भी इसमें साथ दे रहे थे किंतु बारिश का पानी बढ़ता ही जा रहा था। एक ओर इंसान की हिम्मत और उम्मीद तो दूसरी ओर प्रकृति का रौद्र रूप। लड़के रात में जागकर बाँध की रखवाली करते, पर बारिश रूकती ही नहीं थी। एक दोपहर बाढ़ का पानी बाँध को लॉघ गया। पलभर में पूरे गाँव में शोर मच गया। लोग टीले की ओर दौड़े। टीले के नीचे स्कूल था। वहाँ भी उन्होंने शरण ली। लक्ष्मी दोनों लड़कियों और छोटे लड़कों को साथ लेकर निकलते–निकलते कुछ पिछड़ गई। वह अच्युत का इंतजार कर रही थी पर वह नहीं आया। ठीक उसी समय बाँध भी टूट गया। नदी की धारा तेजी से गाँव की ओर बढ़ी। तबाही आ चुकी थी। लक्ष्मी को कहीं दूर से अच्युत की पुकार सुनाई दी पर वह दिखाई न दिया। उसने लड़कियों को आगे जाने को कहा और जैसे ही खुद चलने को हुई, पानी घुटनों तक, फिर गले तक आ गया। वह शिवमंदिर के पास तक ही पहुँच पाई थी। उसने एक हाथ से बच्चे को उठाया और दूसरे हाथ से वहॉ खड़े बरगद के पेड़ की जटा पकड़ ली। फिर वह कब पेड़ पर चढ़ गई, खुद उसे पता नहीं चला। पानी में बरगद का पेड़ भी डूबने लगा। पानी दिन–रात बह रहा थ। पेड़ उखड़ रहे थे। घर बह रहे थे। मनुष्य और पशु सब पानी में समाए थे। टीले पर चढ़े हुए लोग व्याकुल थे। सब अपनों को खोज रहे थे। टीले के नीचे स्कूल भी डूब चुका था। उसके कमरों में पानी था। जो छत पर थे, उनके घुटनों तक पानी था। जब लक्ष्मी को होश आया उसने बेटे का मुँह स्तन से लगा नहीं पाया। उसका बेटा कहीं नहीं दिखाई दिया। वह खूब रोई पर उसका 'रोना' सुननेवाला कोई न था। वह न कुछ देखना चाहती थी, न सुनना। उसके तन–मन में कहीं भी ताकत नहीं बची थी। एक लाश की तरह वह पेड़ पर टिकी थी। फिर उसे कुछ याद आया और शाखाओं में फँसी चीज को उसने देखना चाहा। वहाँ फँसे बच्चे को वह उठा लाई। बच्चे की आँखें मुँदी थी, शरीर फूल गया था, सीने में धड़कन नहीं थी। वह उसका छोटा बेटा नहीं था। फिर भी लक्ष्मी ने अपने सीने से सटाया और अपना स्तन उसके मुँह के पास लगाकर जोरों से भींच लिया। कहानी का शीर्षक 'लक्ष्मी' एक ओर माँ की ममता और पालक रूप को व्यक्त कर रहा है तो दूसरी ओर लक्ष्मी और उस जैसे अभावग्रस्त लोगों के जीवन के अभाव को व्यंग्यात्मक रूप में उभारता है।
प्रश्न	1. लक्ष्मी कौन थी? उसकी पारिवारिक परिस्थिति का चित्र प्रस्तुत कीजिए। 2. कहानी के शीर्षक की सार्थकता पर विचार करें। 3. लक्ष्मी का चरित्र चित्रण करें। 4. कहानी का सारांश प्रस्तुत करें।

लेखक का नाम	ईश्वर पेटलीकर
पाठ का नाम	माँ
विषय वस्तु मूल भूत तथ्य	यह कहानी मंगु और उसकी माँ की है। मंगू एक गूँगी और मानसिक रूप से अक्षम लड़की है। मंगु के अलावे उसकी माँ को तीन संतानें थी। दो बेटे और एक बेटी। सभी की शादी हो चुकी थी। बेटे शहर में रहते थे और बेटी ससुराल। मॉ के लिए मंगु ही सब कुछ थी। उसका नहाना, खाना, नित्यकर्म, सब कुछ वह खुद करती। लोग माँ को सलाह देते कि मंगु को पागलों के अस्पताल में भर्ती करवा दे पर मॉ कहती कि जब माँ होकर वह सेवा नही कर सकती तो अस्पताल वाले क्या करेंगे। उसके बेटे माँ की भावना समझते थे। इसलिए वे कभी ऐसी बात नहीं करते थे। बहुओं को मंगु के प्रति माँ की यह भावना अखर जाती थी। उन्हें लगता पोते–पोतियों से भी ज्यादा यह मंगु को ही प्यार करती है। मंगु की बड़ी बहन की भी अपनी माँ से शिकायत रहती कि उसके कारण ही मंगु अब तक खुद से पाखाना–पेशाब की आदत नहीं डाल पाई है, जबकि जानवर भी सिखाने से सीख जाते हैं। मंगु चौदह की हो रही थी। किसी ज्योतिष ने कहा – 'अगहन का महीना उसके लिए अच्छा है।' मॉ तभी से उस उम्मीद में रहने लगी, पर उसकी स्थिति में सुधार नहीं था। तभी उसी गाँव की लड़की कुसुम जो शहर के कन्या विद्यालय में पढ़ती थी, पागल हो गई। उसके घरवालों ने उसे अस्पताल में भर्ती कराया और तीन महीने में वह ठीक होकर लौट आई। लोगों ने माँ से कुसूम की ही तरह मंगु को अस्पताल में भर्ती कराने के लिए कहा। मंगु बड़ी होती जा रही थी और माँ वृद्ध। उसके भीतर तरह तरह के विचार आ रहे थे। उसके बाद मंगु को देखनेवाला कौन था। उसने बड़े बेटे को पत्र लिखा। बेटा अस्पताल में भर्ती कराने की सब तैयारी कर आ गया। माँ का मन अब भी मान नहीं रहा था। अस्पताल पहुँचकर उसने तरह–तरह के मरीज देखे। उसे इतना तो विश्वास हो गया कि अस्पताल के लोग भले हैं, दयालु हैं। डॉक्टर मेट्रन, नर्स सबने उसे भरोसा दिया। बेटा माँ को लेकर अस्पताल से गाँव आ गया, पर माँ का ध्यान मंगु पर ही अटका था। उसके खाने–सोने सब की चिंता माँ को थी। माँ की सिसकियाँ बेटे तक पहुँच रही थी। उसे मंगु से कोई खास ममता न थी। पर मॉ का दुख उससे देखा न जा रहा था। उसने मंगु की जवाबदेही उठा लेने का निश्चय किया। माँ की सिसकी अगर दोबारा उसे सुनाई देती तो वह उसी समय माँ को यह बता देता। सुबह उसकी नींद माँ की चीखों से खुली। वह चीख रही थी कि दौड़ों रे दौड़ों। मेरी मंगु को मार डाला रे! माँ भी अब मंगु की ही तरह हो गई थी।
प्रश्न	1. माँ गंगु को अस्पताल में क्यों नहीं भर्ती कराना चाहती? विचार करें। 2. कहानी का सारांश प्रस्तुत करें। 3. कहानी के शीर्षक की सार्थकता पर विचार करें 4. मंगु की माँ का चरित्र–चित्रण करें।

लेखक का नाम	नगर
पाठ का नाम	सुजाता
विषय वस्तु मूल भूत तथ्य	यही कहानी बल्लि अम्माल और उसकी बेटी पाप्पाति की है। पाप्पाति को बुखार था। गाँव के डॉक्टर के कहने पर मॉ वल्लि उसे लेकर मदुरै के बड़े अस्पताल आती है। अस्पताल में डॉक्टरों ने उसे देखा और बड़े डॉक्टर ने उसे भर्ती कर लेने के लिए कहा। उसने वल्लि को भरोसा दिलाया कि उसकी बेटी ठीक हो जाएगी। अब बारी पाप्पाति को अस्पताल में भर्ती कराने की थी। मॉ इस टेबल से उस टेबल कागजी कार्रवाइयों को पूरा करने के लिए भटकती रही। वह दूसरों से पूछती थी पर अस्पताल की भागम भाग में कोई ठीक से बता नहीं रहा था। वह पढ़ी लिखी भी नहीं थी कि सही कमरे में खुद ही पहूँच जाती। वह सुबह से भूखी थी और अस्पताल में फैली विशेष गंध के कारण उसका सर चकराने भी लगा था। फिर उसे बताया गया कि आज अस्पताल में बेड नहीं होने के कारण उसकी बेटी को भर्ती नहीं किया जा सकता और वह कल आए। पाप्पाति को उसने स्ट्रेचर पर ही अकेला छोड़ दिया था। वह उसे ढूँढने लगी। अस्पताल के कमरे उसे एक तरह से ही दिख रहे थे। उसे पाप्पति दिखाई दी , पर जिस कमरे में वह थी उसका दरवाजा बंद था। बेटी तक पहुँचने के लिए उसने जिस व्यक्ति से दरवाजा खोलने की प्रार्थना की वह सुनने के लिए तैयार नहीं था। फिर किसी से पैसे पाकर उसने दरवाजा खोला। वल्लि झटपट अंदर भागी और बेटी को गले लगा लिया। उसे समझ नहीं आ रहा था कि अगली सुबह तक वह यहाँ क्या करें। उसे रहने भी दिया जाएगा या नहीं। उसने घर जाने का निर्णय लिया और चल पड़ी। इधर बड़े डॉक्टर जब वार्ड की ओर आए तो उन्हें मेनिनजाइटिस की इस मरीज का ख्याल आया। जूनियर डॉक्टरों को उन्होंने उसकी जानकारी लेने के लिए भेजा। क्लर्कों ने उन्हें बेड न होने के कारण भर्ती करने की बात कही। बड़े डॉक्टर को जब यह जानकारी मिली तो वे नाराज हुए कि कल सुबह तक तो वह मर जाएगी। अगर बेड नहीं था तो उनके विभाग का बेड उसे दे दिया जाता। डॉक्टर, नर्स सभी वल्लि अम्माल को खोजने के लिए दौड़े किंतु वल्लि अपनी बेटी को लेकर घर के रास्ते बढ़ चुकी थी। वह सोच रही थी कि मामूली बुखार ही तो है, वैद्य जी को दिखा दूँगी। खड़िया मिट्टी का लेप कर दूँगी। गाँव के अस्पताल न ले जाऊँगी। ओझा से झाड़–फँक करवा दूँगी, और सब ठीक हो जाएगा। उसने मन्नत माँगी कि पाप्पाति ठीक हो जाएगी तो मंदिर जाकर दोनों हाथों में रेजगारी भरकर भगवान को भेंट चढ़ाएगी। वल्लि अम्माल मदुरै नगर अपनी बेटी के इलाज के लिए आई थी, पर बिना इलाज के उसे लौटना पड़ा। अस्पताल में बेटी को वह भर्ती न करा पाई। कोई ठीक से कुछ बतानेवाला नहीं था। वहाँ जाकर वह भटकती ही रही। यह केवल अस्पताल का ही दृश्य नहीं है। गाँव से आनेवाला सीधा–सादा व्यक्ति किसी बड़े नगर में आकर इसी तरह भटक जाता है, उसकी उम्मीदें पूरी नहीं हो पाती हैं, नगर से उसे निराशा ही मिलती है। इसलिए कहानी का शीर्षक 'नगर' सटीक है।
प्रश्न	1. नगर शीर्षक की सार्थक्ता पर विचार करें। 2. पाप्पाति कौन थी? वह शहर क्यां लायी गई थी?

	3. कहानी का सारांश प्रस्तुत करें। 4. वल्लि का चरित्र–चित्रण करें।

लेखक का नाम	साँवर दइया
पाठ का नाम	धरती कब तक घूमेगी
विषय वस्तु मूल भूत तथ्य	यह कहानी सीता की है। पति के गुजरने के बाद वह बड़े बेटे कैलाश के साथ रह रही थी। एक दिन कैलास ने छोटे भाइयों–नारायण और बिरजू को बुलाकर कहा कि माँ को रखने का ठेका सिर्फ उसी ने नहीं ले रखा है। जैसे उन्होंने घर में हिस्सा लिया है उसी तरह माँ की जवाबदेही भी उठानी चाहिए। फैसला यह हुआ कि बारी–बारी से तीनों माँ को एक–एक महीने अपने साथ रखेंगे। सीता यह सब देख रही थी। किसी ने उससे कुछ नहीं पूछा। पति के गुजर जाने के बाद वह असहाय थी। उसने यह न सोचा था कि उसके बेटे दो वक्त की रोटी के लिए ऐसा करेंगे। वह कैलाश के हिस्से से नारायण के हिस्से और नारायण के हिस्से से बिरजू के हिस्से में जाने लगी। घर के बच्चे इससे खुश होते कि दादी अब उनके साथ होगी और उन्हें दादी के साथ खाना खाने का मौका मिलेगा। जबकि उसके बेटे इस बात पर उदास थे। इस तरह पाँच साल बीते और इन पाँच सालों में न जाने कितनी बार झगड़ा हुआ। उसकी दो वक्त की रोटी बहु–बेटे पर बोझ हो रही थी। और, अब तो हद हो गई। कैलाश ने भाइयों से कहा कि यह बात अच्छी नहीं कि माँ महीने इधर–उधर लुढकती रहे। तीनों भाई पचास–पचास रूपये हर महीने माँ को दे दिया करें। उसके लिए इतना काफी है। चाय हम पिलाते हैं, आगे भी पिलाते रहेंगे। वह अपना पकाए–खाए किसी ने इस प्रस्ताव का विरोध नहीं किया। बिरजू ने जब माँ से पूछ लेने की बात दबे स्वर में कही तो उसे अनसुना कर दिया गया। यहाँ बात माँ को जँचने की नहीं, खुद को जँचने की थी। सीता यह सब सुन रही थी। उसे अपने घर में घुटन महसूस होने लगी। उसके ह्दय में आँसुओं का समुद्र उमड़ पड़ा। वह मुफ्त का नहीं खाती थी। बच्चों की देखभाल करती थी, घर के काम करती थी। क्या उसके बेटे उसे मजदूरी दे रहे हैं? इस तरह तो वह कहीं भी कमा–खा लेगी। कहीं भी रह लेगी। धरती की तरह वह कब तक घूमती रहेगी। इस बेटे से उस बेटे तक अपना ठिकाना कब तक बदलती रहेगी। अगले ही दिन वह अँधेरे–अँधेरे घर छोड़ देती है। घर की घुटन से अब वह आजाद थी। उसके चारों ओर खुली हवा थी। आकाश उसे अनन्त और धरती बहुत बड़ी लग रही थी। सीता धरती की तरह घूम रही थी। कभी इस बेटे के पास तो कभी उस बेटे के पास। उसकी भावनाओं को कोई नहीं समझता। कहानी का यह शीर्षक उसकी समूची स्थिति उभारने वाला है।
प्रश्न	1. सीता अपने ही घर में क्यों घुटन महसूस करने लगी? 2. सीता का चरित्र–चित्रण करें। 3. कहानी के शीर्षक की सार्थकता प्रकट करें। 4. कहानी का सारांश प्रस्तुत करें।